इकाई 3 : समसामयिक मुद्दे

पाठ 3.1 : बच्चे काम पर जा रहे हैं

पाठ 3.2 : अकेली

पाठ 3.3 : जामुन का पेड़

पाठ 3.4 : रीढ़ की हड्डी

इकाई 3

समसामयिक मुद्दे

हमारे संविधान में सबके लिए समता और समानता के अधिकार का प्रावधान है। लेकिन आस–पास नजर डालें तो ऐसी कई स्थितियाँ देखने को मिलती हैं, जहाँ कई क्षेत्रों में असमानताएं हैं। साहित्य में अक्सर ऐसी असमानतापूर्ण सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों की झलक मिलती है। इस इकाई में उन्हीं परिस्थितियों को केंद्र में रख कर कुछ रचनाओं को शामिल किया गया है।

राजेश जोशी की कविता **बच्चे काम पर जा रहे हैं** आर्थिक विषमता, अधिकारों के उल्लंघन और बाल श्रम के प्रति असंवेदनशीलता की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती है। इसी तरह मन्नू भंडारी की कहानी **अकेली** में सोमा बुआ के युवा पुत्र की मृत्यु से पनपे एकाकीपन और अपनों द्वारा भावात्मक अस्वीकार्यता का मार्मिक चित्रण किया गया है। दोनों रचनाएँ वृद्धों और बच्चों के प्रति समाज के असहज व्यवहार को रेखांकित करती हैं, जबकि हमारा दायित्व है कि हम बुजुर्गों और बच्चों का विशेष ध्यान रखें।

कृश्न चंदर की कहानी **जामुन का पेड़** संवेदनशून्य व्यवस्था और उसमें फँसे आम आदमी के जीवन की विडंबना को व्यंग्यात्मक व हास्यपरक रूप में प्रस्तुत करती है। इस हास्यपरकता को बनाने के लिए कहानी में व्यवस्था पर अतिश्योक्तिपूर्ण व्यंग्य भी किया गया है।

जगदीश चंद्र माथुर की प्रसिद्ध एकांकी **रीढ़ की हड्डी** समाज में स्त्रियों के प्रति व्याप्त रूढ़िवादी मानसिकता पर प्रहार करते हुए, स्त्रियों में शिक्षा से उत्पन्न आत्मविश्वास, साहस व स्वयं निर्णय लेने की क्षमता को प्रस्तुत करती है।

इस इकाई में समाज में मौजूदा समस्याओं की एक बानगी भर मिलती है, जबकि ऐसे अनेक मुद्दे हैं, जिन पर विचार किए जाने की जरूरत है। हम आशा करते हैं कि इस इकाई को पढ़ते हुए आप और आपके साथी अपने आस–पास की सामाजिक परिस्थितियों पर विचार कर पाएंगे।

पाठ 3.1 : बच्चे काम पर जा रहे हैं

राजेश जोशी

BDM2GD

राजेश जोशी *का जन्म 18 जुलाई 1946 को नरसिंहगढ़, मध्यप्रदेश में हुआ। वे हिंदी के प्रमुख प्रगतिशील कवि माने जाते हैं। उन्हें वर्ष 2002 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनके प्रमुख कविता संग्रह* ***दो पंक्तियों के बीच, नेपथ्य में हँसी, एक दिन बोलेंगे पेड़*** *और* ***मिट्टी का चेहरा*** *हैं। यह कविता उनके संग्रह* ***नेपथ्य में हँसी*** *से ली गई है।*

कोहरे से ढँकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं
सुबह–सुबह।

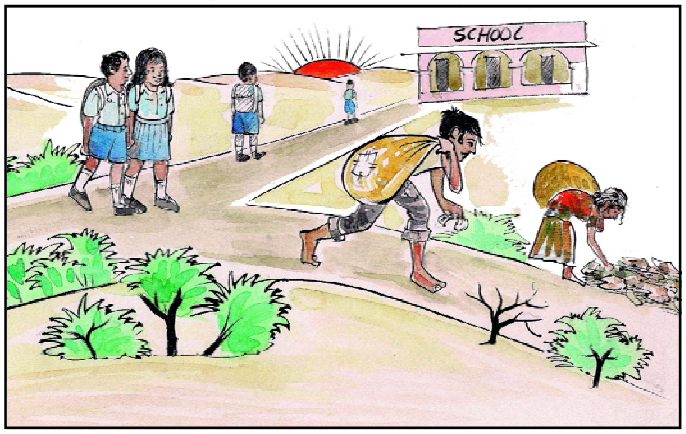

बच्चे काम पर जा रहे हैं
हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह,
भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना
लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह
काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?

क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें?
क्या दीमकों ने खा लिया है
सारी रंग–बिरंगी किताबों को?
क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने?
क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं
सारे मदरसों की इमारतें?

क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन
खत्म हो गए हैं एकाएक?

तो फिर बचा ही क्या है इस दुनियाँ में?
कितना भयानक होता अगर ऐसा होता
भयानक है, लेकिन इससे भी ज्यादा यह

कि हैं सारी चीजें हस्ब–ए–मामूल
पर दुनिया की हजारों सड़कों से गुजरते हुए
बच्चे, बहुत छोटे–छोटे बच्चे
काम पर जा रहे हैं।

शब्दार्थ

विवरण – ब्यौरा देना, तथ्य की तरह बताना; **हस्ब–ए–मामूल** – ज्यों–की–त्यों उपलब्ध होना, यथावत; **मदरसा** – विद्यालय।

अभ्यास

पाठ से

1. ''बच्चे काम पर जा रहे हैं।'' इस पंक्ति को हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति क्यों कहा गया है?
2. कवि ने ऐसा क्यों कहा है– ''भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना, लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह।''
3. कविता में आईं इन चीज़ों के साथ क्या हो जाने का अंदेशा व्यक्त किया गया है?

चीज़ों के नाम	अंदेशा
गेंदें	
किताबें	
खिलौने	
मदरसों की इमारतें	
मैदान	
बगीचे	
घरों के आँगन	

पाठ से आगे

1. बच्चों के काम पर जाने से उनका बचपन किस तरह प्रभावित होता है?
2. बच्चों को काम पर जाना पड़ता है। आपकी समझ से इसके क्या–क्या कारण हो सकते हैं?
3. यदि सारे मैदान, बगीचे और घरों के आँगन सचमुच खत्म हो जाएँ तो इससे हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

4. (क) सुबह–सुबह उठकर आप क्या–क्या करते हैं?

   (ख) जो बच्चे स्कूल नहीं जा पाते, वे क्या–क्या करते होंगे?

भाषा के बारे में

1. (क) 'पेड़ काटे जा रहे हैं।' यह विवरण की तरह लिखा गया है। इसी बात को सवाल की तरह हम लिख सकते हैं– ''पेड़ क्यों काटे जा रहे हैं?''

   आप भी किन्हीं पाँच पंक्तियों को विवरण की तरह लिखिए और उन्हें सवाल के रूप में बदलिए।

   (ख) सवाल और विवरण में क्या अंतर है?

2. 'चाहिए' के बारे में–

   (क) मुझे केला चाहिए।

   (ख) तुम्हें स्कूल जाना चाहिए।

   उपर्युक्त दोनों वाक्यों में 'चाहिए' के अर्थ में क्या अंतर है? बताइए और ऐसे ही दो और वाक्य लिखिए।

3. प्रायः **क्या, कब, कहाँ, कैसे** और **कौन** आदि प्रश्नसूचक शब्दों की मदद से प्रश्नों का निर्माण किया जाता है। निम्नांकित वाक्य में उत्तर सूचक शब्द के स्थान पर उपर्युक्त प्रश्नसूचक शब्दों का प्रयोग करते हुए प्रश्नों का निर्माण कीजिए।

   ''सुबह–सुबह कोहरे से ढँकी सड़क पर बच्चे पैदल काम पर जा रहे हैं''

   जैसे– प्रश्न : सुबह–सुबह कोहरे से ढँकी सड़क पर बच्चे पैदल <u>कहाँ</u> जा रहे हैं?

   उत्तर : सुबह–सुबह कोहरे से ढँकी सड़क पर बच्चे पैदल <u>काम पर</u> जा रहे हैं।

योग्यता विस्तार

1. समूह कार्य –

   (क) पता करें कि आपके गाँव/मोहल्ले में आपके हमउम्र कितने बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं?

(ख) वे जब स्कूल नहीं जाते, तब क्या–क्या करते हैं? उनमें लड़कियों और लड़कों की संख्या कितनी है? उनका शैक्षिक स्तर क्या है?

(ग) पता लगाने की कोशिश कीजिए कि बच्चों के स्कूल ना जाने या छोड़ने के क्या कारण हो सकते हैं?

2. बाल मजदूरी को रोकने के लिए हमारे संविधान में कुछ प्रावधान किए गए हैं। नीचे दिए गए इन संवैधानिक प्रावधानों को पढ़कर समूह में चर्चा कीजिए।

संवैधानिक प्रावधान

संविधान के कुछ प्रावधान ऐसे हैं जो सीधे तौर पर "बालश्रम" के लिए संबोधित हैं।

अनुच्छेद–24

फैक्टरियों आदि में बाल श्रमिकों पर प्रतिबंध।

"चौदह वर्ष से कम आयु का कोई भी बच्चा फैक्टरी, खदान या अन्य खतरनाक कार्यस्थलों पर काम में नहीं लगाया जाएगा।"

5. आपने ''बच्चे काम पर जा रहे हैं'' कविता पढ़ी। ऐसी ही एक रचना है, नरेश सक्सेना की कविता 'अच्छे बच्चे'। शिक्षकों की मदद से इसे खोजिए और पढ़िए।

बालश्रम निषेध अधिनियम

बालश्रम का मतलब ऐसे कार्य से है, जिसमें कार्य करने वाला व्यक्ति कानून द्वारा निर्धारित आयु–सीमा से छोटा है। इस प्रथा को कई देशों और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों ने शोषित करने वाली प्रथा माना है। इन्हीं बातों से संबंधित बालश्रम (निषेध एवं विनियम) अधिनियम 1986 लागू हुआ। संविधान का अनुच्छेद 24 इससे संबंधित है। यह अधिनियम 14 साल की आयु से कम के बच्चों से काम कराना गैरकानूनी मानता है साथ ही 18 साल से कम उम्र के बच्चों को कारखानों/खदानों में काम करने का निधेष करता है। इस नियम की कुछ सीमाएँ भी निर्धारित की गयी है– जैसे–पारिवारिक व्यवसायों में बच्चे स्कूल से वापस आकर या गर्मी की छुट्टियों में काम कर सकते हैं। इसी तरह फिल्मों में बाल कलाकारों को काम करने की अनुमति है। खेल से जुड़ी गतिविधियों में भी वे सहभागिता निभा सकते हैं। इसी प्रकार 14–18 वर्ष की आयु के बच्चों को काम पर रखा जा सकता है, बशर्ते वह कार्य/कार्यस्थल सूची में शामिल खतरनाक व्यवसाय या प्रक्रिया से न जुड़ा हो। इस नियम का उल्लंघन करने पर दण्ड का भी प्रावधान है। यदि कोई नागरिक इस कानून की अवमानना होते हुए देखता है तो वह इसकी शिकायत पुलिस/मजिस्ट्रेट से कर सकता है, या बच्चों के अधिकारों पर काम करने वाली सामाजिक संस्थाओं के संज्ञान में ला सकता है।

उक्त कानून का उल्लंधन करते हुए पकड़े जाने पर वारंट की गैर–मौजूदगी में गिरफ्तारी या जाँच की जा सकती है। अपराध सिद्ध होने पर संबंधित व्यक्ति/मालिक को 6 माह से 2 साल की जेल और 20,000/– 50,000/– रूपये तक जुर्माना हो सकता है। यदि बच्चों के माता पिता भी व्यावसायिक उद्देश्य से निर्धारित से कम उम्र के बच्चों द्वारा काम कारवाते हैं या इसकी अनुमति देते हैं तो उन्हें सजा दी जा सकती है। कानून उन्हें अपनी भूल सुधारने का एक अवसर देता है और इसे समाधान/समझौते की प्रक्रिया से सुलझाया जा सकता है पर यदि वे (माता–पिता) पुनः अपने बच्चें को निर्धारित आयु सीमा से पूर्व काम करवाते हैं तो उन्हें 10,000/– तक का जुर्माना हो सकता है।

पाठ 3.2 : अकेली

मन्नू भण्डारी

*हिंदी की चर्चित कहानीकार **मन्नू भण्डारी** का जन्म सन् 1931 ई. में भानपुरा, मध्यप्रदेश में हुआ। चर्चित स्त्री रचनाकार के रूप में इन्होंने बहुत सी कहानियाँ लिखी हैं, जो आठ संग्रहों में संकलित हैं। उनकी एक कहानी **'यही सच है'** पर हिंदी में फिल्म भी बनी, जो बहुत लोकप्रिय हुई थी। उन्होंने कई उपन्यास भी लिखे हैं जिनमें **'महाभोज'** एवं **'आपका बंटी'** विशेष उल्लेखनीय है।*

सोमा बुआ बुढ़िया हैं।

सोमा बुआ परित्यक्ता हैं।

सोमा बुआ अकेली हैं।

सोमा बुआ का जवान बेटा क्या जाता रहा, उनकी अपनी जवानी चली गई। पति को पुत्र–वियोग का ऐसा सदमा लगा कि वे पत्नी, घर–बार तजकर तीरथवासी हुए और परिवार में कोई ऐसा सदस्य था नहीं जो उनके एकाकीपन को दूर करता। पिछले बीस वर्षों से उनके जीवन की इस एकरसता में किसी प्रकार का कोई व्यवधान उपस्थित नहीं हुआ, कोई परिवर्तन नहीं आया। यों हर साल एक महीने के लिए उनके पति उनके पास आकर रहते थे। पर कभी उन्होंने पति की प्रतीक्षा नहीं की, उनकी राह में आँखें नहीं बिछाईं। जब तक पति रहते उनका मन और भी मुरझाया हुआ रहता क्योंकि पति के स्नेहहीन व्यवहार का अंकुश उनके रोजमर्रा के जीवन की अबाध गति से बहती स्वच्छंद धारा को कुंठित कर देता। उस समय उनका घूमना–फिरना, मिलना–जुलना बंद हो जाता है और संन्यासीजी महाराज से तो यह भी नहीं होता कि दो मीठे बोल–बोलकर सोमा बुआ को एक ऐसा संबल ही पकड़ा दें, जिसका आसरा लेकर वह उनके वियोग के ग्यारह महीने काट दें। इस स्थिति में बुआ को अपनी ज़िंदगी पास–पड़ोसवालों के भरोसे ही काटनी पड़ती थी। किसी के घर मुंडन हो, छठी हो, जनेऊ हो, शादी हो या ग़मी, बुआ पहुँच जातीं और फिर छाती फाड़कर काम करतीं, मानो वे दूसरे के घर नहीं अपने ही घर में काम कर रही हों।

आजकल सोमा बुआ के पति आए हुए हैं और अभी–अभी कुछ कहा–सुनी हो चुकी है। बुआ आँगन में बैठी धूप खा रही हैं, पास रखी कटोरी से तेल लेकर हाथों में मल रही हैं, और बड़बड़ा रही हैं। इस एक महीने में अन्य अवयवों के शिथिल हो जाने के कारण उनकी जीभ ही सबसे अधिक सजीव और सक्रिय हो उठती है। तभी हाथ में एक फटी साड़ी और पापड़ लेकर ऊपर से राधा भाभी उतरीं।

''क्या हो गया बुआ, क्यों बड़बड़ा रही हो, फिर संन्यासीजी महाराज ने कुछ कह दिया क्या?''

''अरे, मैं कहीं चली जाऊँ सो भी इन्हें नहीं सुहाता। कल चौकवाले किशोरीलाल के बेटे का मुंडन था, सारी बिरादरी का न्यौता था। मैं तो जानती थी कि ये पैसे का ही गुरूर है, जो मुंडन पर भी सारी बिरादरी को न्यौता है, पर काम उन नई–नवेली बहुओं से सँभलेगा नहीं, सो जल्दी ही चली गई। हुआ भी वही. . .'' और सरककर बुआ ने राधा के हाथ से पापड़ लेकर सुखाने शुरू कर दिए। ''एक काम गत से नहीं हो रहा था। अब घर में कोई बड़ा–बूढ़ा हो तो बतावे या कभी किया हो तो जानें। गीतवाली औरतें मुंडन पर बन्ना–बन्नी गा रही थीं, मेरा तो हँसते–हँसते पेट फूल गया।'' और उसकी याद से ही कुछ देर पहले का दुःख और आक्रोश धुल गया। अपने सहज स्वाभाविक रूप में वे कहने लगीं– ''भट्टी पर देखा तो अजब तमाशा . . . समोसे कच्चे ही उतार दिए और इतने बना दिए कि दो बार खिला दो और गुलाबजामुन इतने कम कि एक पंगत में भी पूरे न पड़ें। उसी समय खोया मँगवाकर नए गुलाबजामुन बनाए। दोनों बहुएँ और किशोरीलाल तो बिचारे इतना जस मान रहे थे कि क्या बताऊँ? कहने लगे– ''अम्मा! तुम न होती तो आज भद्द उड़ जाती। अम्मा! तुमने लाज रख ली!'' मैंने तो कह दिया कि ''अरे, अपने ही काम नहीं आवेंगे तो कोई बाहर से तो आवेगा नहीं। ये तो आजकल इनका रोटी–पानी का काम रहता है, नहीं तो मैं तो सवेरे से ही चली आती!''

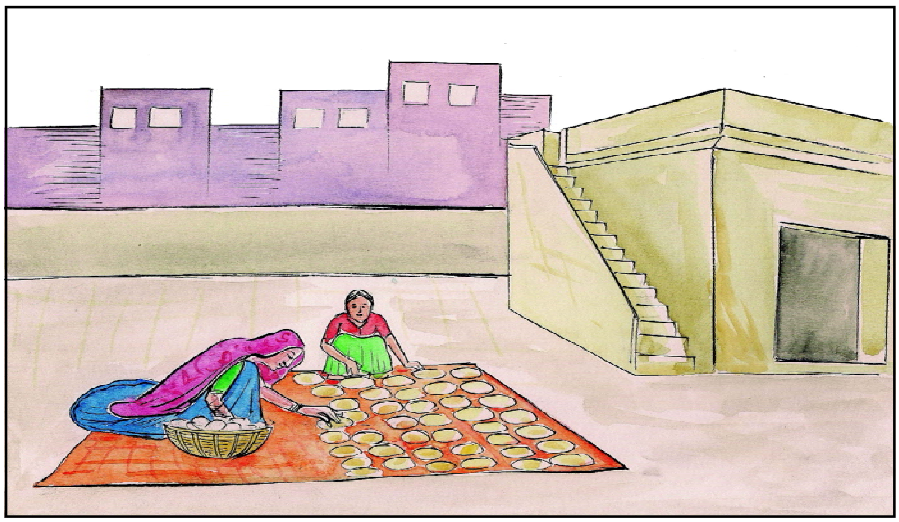

''तो संन्यासी महाराज क्यों बिगड़ पड़े? उन्हें तुम्हारा आना–जाना अच्छा नहीं लगता बुआ?''

''यों तो मैं कहीं आऊँ–जाऊँ सो ही इन्हें नहीं सुहाता और फिर कल किशोरी के यहाँ से बुलावा नहीं आया। अरे, मैं तो कहूँ कि घरवालों को कैसा बुलावा? वे लोग तो मुझे अपनी माँ से कम नहीं समझते, नहीं तो कौन भला यों भट्ठी और भंडार–घर सौंप दे? पर इन्हें अब कौन समझावे। कहने लगे, तू ज़बरदस्ती दूसरों के घर में टाँग अड़ाती फिरती है।'' और एकाएक उन्हें उस क्रोध–भरी वाणी और कटुवचनों का स्मरण हो आया जिनकी बौछार कुछ देर पहले ही उन पर होकर गुजर चुकी थी। याद आते ही फिर उनके आँसू बह चले।

''अरे, रोती क्या हो बुआ! कहना–सुनना तो चलता रहता है। संन्यासीजी महाराज एक महीने को तो आकर रहते हैं, सुन लिया करो, और क्या?''

''सुनने को तो सुनती ही हूँ, पर मन तो दुखता ही है कि एक महीने को आते हैं तो भी कभी मीठे बोल नहीं बोलते। मेरा आना–जाना इन्हें सुहाता नहीं, सो तू ही बता राधा, ये तो साल में ग्यारह महीने हरिद्वार रहते

हैं। इन्हें तो नाते–रिश्तेवालों से कुछ लेना–देना नहीं, पर मुझे तो सबसे निभाना पड़ता है। मैं भी सबसे तोड़–ताड़ कर बैठ जाऊँ तो कैसे चले? मैं तो इनसे कहती हूँ कि जब पल्ला पकड़ा है तो अंत समय में भी साथ ही रखो, सो तो इनसे होता नहीं। सारा धरम–करम ये ही लूटेंगे, सारा जस ये ही बटोरेंगे और मैं अकेली पड़ी–पड़ी यहाँ इनके नाम को रोया करूँ। उस पर से कहीं आऊँ–जाऊँ, वह भी इनसे बर्दाश्त नहीं होता!'' और बुआ फूट–फूटकर रो पड़ीं। राधा ने आश्वासन देते हुए कहा–''रोओ नहीं बुआ, अरे वे तो इसलिए नाराज हुए कि बिना बुलाए तुम चली गईं।''

''बेचारे इतने हंगामे में बुलाना भूल गए तो मैं भी मान करके बैठ जाती? फिर घरवालों को कैसा बुलाना? मैं तो अपनेपन की बात जानती हूँ। कोई प्रेम नहीं रखे तो दस बुलावे पर नहीं जाऊँ और प्रेम रखे तो बिना बुलाए भी सिर के बल जाऊँ। मेरा अपना हरखू होता और उसके घर काम होता तो क्या मैं बुलावे के भरोसे बैठी रहती? मेरे लिए जैसा हरखू वैसा किशोरीलाल। आज हरखू नहीं है इसी से दूसरों को देखकर मन भरमाती रहती हूँ।'' और वे हिचकियाँ लेने लगीं।

पापड़ों को फैलाकर स्वर को भरसक कोमल बनाकर राधा ने कहा– ''तुम भी बुआ बात को कहाँ–से–कहाँ ले गईं? अब चुप भी होओ! अच्छा देखो, तुम्हारे लिए एक पापड़ भूनकर लाती हूँ, खाकर बताना कैसा है?'' और वह पापड़ लेकर ऊपर चढ़ गई।

कोई सप्ताह–भर बाद बुआ बड़े प्रसन्न मन से आईं और संन्यासीजी से बोलीं– ''सुनते हो, देवरजी के ससुरालवालों की किसी लड़की का संबंध भागीरथी के यहाँ हुआ है। वे सब लोग यहीं आकर ब्याह कर रहे हैं। देवरजी के बाद तो उन लोगों से कोई संबंध ही नहीं रहा, फिर भी हैं तो समधी ही। वे तो तुमको भी बुलाए बिना नहीं मानेंगे। समधी को आखिर कैसे छोड़ सकते हैं?'' और बुआ पुलकित होकर हँस पड़ीं। संन्यासीजी की मौन उपेक्षा से उनके मन को ठेस पहुँची, फिर भी वे प्रसन्न थीं। इधर–उधर जाकर वे इस विवाह की प्रगति की खबरें लातीं! आखिर एक दिन वे यह भी सुन आईं कि उनके समधी यहाँ आ गए हैं और जोर–शोर से तैयारियाँ हो रही हैं। सारी बिरादरी को दावत दी जाएगी–खूब रौनक होनेवाली है। दोनों ही पैसेवाले ठहरे।

''क्या जानें! हमारे घर तो बुलावा भी आएगा या नहीं, देवरजी को मरे पच्चीस बरस हो गए, उसके बाद से तो कोई संबंध ही नहीं रखा। रखे भी कौन, यह काम तो मर्दों का होता है, मैं तो मरदवाली होकर भी बेमरद की हूँ।'' और एक ठंडी साँस उनके दिल से निकल गई।

''अरे वाह बुआ! तुम्हारा नाम कैसे नहीं होगा। तुम तो समधिन ठहरीं। देवर चाहे न रहे पर कोई रिश्ता थोड़े ही टूट जाता है!'' दाल पीसती हुई घर की बड़ी बहू बोली।

''है बुआ, नाम है। मैं तो सारी लिस्ट देखकर आई हूँ।'' विधवा ननद बोली। बैठे–ही–बैठे दो कदम आगे सरककर बुआ ने बड़े उत्साह से पूछा–''तू अपनी आँखों से देखकर आई है नाम? नाम तो होना ही चाहिए। पर मैंने सोचा कि क्या जाने आजकल के फैशन में पुराने संबंधियों को बुलाना हो, न हो।'' और बुआ बिना दो पल भी रुके वहाँ से चल पड़ीं। अपने घर जाकर सीधे राधा भाभी के कमरे में चढ़ीं–''क्यों री राधा! तू तो जानती है

कि नई फैशन में लड़की की शादी में क्या दिया जावे है? समधियों का मामला ठहरा, सो भी पैसेवाले। खाली हाथ जाऊँगी तो अच्छा नहीं लगेगा। मैं तो पुराने ज़माने की ठहरी, तू ही बता दे क्या दूँ? अब कुछ बनाने का समय तो रहा नहीं, दो दिन बाकी हैं, सो कुछ बना–बनाया ही खरीद लाना।''

''क्या देना चाहती हो अम्मा? ज़ेवर, कपड़ा, शृंगारदान या कोई और चाँदी की चीज़?''

''मैं तो कुछ भी नहीं समझूँ री। जो कुछ पास है तुझे लाकर दे देती हूँ, जो तू ठीक समझे ले आना। बस, भद्द नहीं उड़नी चाहिए! अच्छा देखूँ पहले कि रुपये कितने हैं?'' और वे डगमगाते कदमों से नीचे आईं। दो–तीन कपड़ों की गठरियाँ हटाकर एक छोटा–सा बक्सा निकाला। उसका ताला खोला। इधर–उधर करके एक छोटी–सी डिबिया निकाली। बड़े जतन से उसे खोला–उसमें सात रुपए की कुछ रेजगारी पड़ी थी और एक अँगूठी। बुआ का अनुमान था कि रुपए कुछ ज्यादा होंगे, पर जब सात ही रुपए निकले तो सोच में पड़ गईं। रईस समधियों के घर में इतने से रुपयों से बिंदी भी नहीं लगेगी। उनकी नज़र अँगूठी पर गई। यह उनके मृतपुत्र की एक मात्र निशानी उनके पास रह गई थी। बड़े–बड़े आर्थिक संकटों के समय भी वे उस अँगूठी का मोह नहीं छोड़ सकी थीं। आज भी एक बार उसे उठाते समय उनका दिल धड़क गया, फिर भी उन्होंने पाँच रुपए और वह अँगूठी आँचल से बाँध ली। बक्से को बंद किया और फिर ऊपर को चलीं, पर इस बार उनके मन का उत्साह कुछ ठंडा पड़ गया था और पैरों की गति शिथिल। राधा के पास जाकर बोलीं– ''रुपए तो नहीं निकले बहू। आएँ भी कहाँ से, मेरे कौन कमानेवाला बैठा है? उस कोठरी का किराया आता है, उसमें दो समय की रोटी निकल जाती है जैसे–तैसे!'' और वे रो पड़ीं। राधा ने कहा–''क्या करुँ बुआ, आजकल मेरा भी हाथ तंग है, नहीं तो मैं ही दे देती। अरे, पर तुम देने के चक्कर में पड़ती ही क्यों हो? आजकल तो लेन–देन का रिवाज़ ही उठ गया है।''

''नहीं रे राधा, समधियों का मामला ठहरा! पच्चीस बरस हो गए तो भी वे नहीं भूले और मैं खाली हाथ जाऊँ? नहीं–नहीं, इससे तो न जाऊँ सो ही अच्छा!''

''तो जाओ ही मत। चलो छुट्टी हुई, इतने लोगों में किसे पता लगेगा कि आईं या नहीं।'' राधा ने सारी समस्या का सीधा–सा हल बताते हुए कहा।

''बड़ा बुरा मानेंगे। सारे शहर के लोग जावेंगे और मैं समधिन होकर नहीं जाऊँगी, तो यही समझेंगे कि देवरजी मरे तो संबंध भी तोड़ लिया। नहीं–नहीं, तू यह अँगूठी बेच ही दे।'' और उन्होंने आँचल की गाँठ खोलकर एक पुराने ज़माने की अँगूठी राधा के हाथ पर रख दी। फिर बड़े मिन्नत भरे स्वर में बोलीं, ''तू तो बाज़ार जाती है राधा, इसे बेच देना और जो कुछ ठीक समझे खरीद लेना। बस, शोभा रह जावे इतना ख़याल रखना।''

गली में बुआ ने चूड़ी वाले की आवाज़ सुनी तो एकाएक ही उनकी नज़र अपने हाथ की भद्दी मटमैली चूड़ियों पर जाकर टिक गई। कल समधियों के यहाँ जाना है, ज़ेवर नहीं है तो कम–से–कम काँच की चूड़ी तो अच्छी पहन लें, पर एक अव्यक्त लाज ने उनके कदमों को रोक दिया, कोई देख लेगा तो! लेकिन दूसरे ही क्षण अपनी इस कमज़ोरी पर विजय पाती–सी वे पीछे के दरवाज़े पर पहुँच गईं और एक रुपया कलदार खर्च करके लाल–हरी चूड़ियों के बंद पहन लिए। पर सारे दिन हाथों को साड़ी के आँचल से ढँके–ढँके फिरीं।

शाम को राधा भाभी ने बुआ को चाँदी की एक सिंदूरदानी, एक साड़ी और एक ब्लाउज का कपड़ा लाकर दे दिया। सब कुछ देख–पाकर बुआ बड़ी प्रसन्न हुईं और यह सोच–सोचकर कि जब वे ये सब दे देंगी तो उनकी समधिन पुरानी बातों की दुहाई दे–देकर उनकी मिलनसारिता की कितनी प्रशंसा करेंगी, उनका मन पुलकित होने लगा। अँगूठी बेचने का ग़म भी जाता रहा। पासवाले बनिए के यहाँ से एक आने का पीला रंग लाकर रात में उन्होंने साड़ी रँगी। शादी में सफेद साड़ी पहनकर जाना क्या अच्छा लगेगा? रात में सोईं तो मन कल की ओर दौड़ रहा था।

दूसरे दिन नौ बजते–बजते खाने का काम समाप्त कर डाला। अपनी रँगी हुई साड़ी देखी तो कुछ जँची नहीं। फिर ऊपर राधा के पास पहुँची–''क्यों राधा! तू तो रँगी साड़ी पहिनती है तो बड़ी आब रहती है, चमक रहती है, इसमें तो चमक आई नहीं?''

''तुमने कलफ जो नहीं लगाया अम्मा, थोड़ा–सा माँड़ दे देतीं तो अच्छा रहता। अभी दे लो, ठीक हो जाएगी। बुलावा कब का है?''

''अरे नए फैशनवालों की मत पूछो, ऐन मौकों पर बुलावा आता है। पाँच बजे का मुहरत है, दिन में कभी भी आ जावेगा।''

राधा भाभी मन–ही–मन मुस्करा उठीं।

बुआ ने साड़ी में माँड़ लगाकर सुखा दिया। फिर एक नई थाली निकाली, अपनी जवानी के दिनों में बुना हुआ क्रोशिए का एक छोटा सा मेज़पोश निकाला। थाली में साड़ी, सिंदूरदानी, एक नारियल और थोड़े–से बताशे सजाए, फिर जाकर राधा को दिखाया। संन्यासी महाराज सवेरे से इस आयोजन को देख रहे थे। उन्होंने कल से लेकर आज तक कोई पच्चीस बार चेतावनी दे दी थी कि यदि कोई बुलाने न आए तो चली मत जाना, नहीं तो ठीक नहीं होगा। हर बार बुआ ने बड़े ही विश्वास के साथ कहा–''मुझे क्या बावली ही समझ रखा है, जो बिना बुलाए चली जाऊँगी?

अरे, वह पड़ोसवालों की नंदा अपनी आँखों से बुलावे की लिस्ट में नाम देखकर आई है, और बुलावेंगे क्यों नहीं? शहरवालों को बुलावेंगे और समधियों को नहीं बुलावेंगे क्या?''

तीन बजे के क़रीब बुआ को अनमने भाव से छत पर इधर–उधर घूमते देख राधा भाभी ने आवाज़ लगाई–''गईं नहीं बुआ?''

एकाएक चौंकते हुए बुआ ने पूछा– ''कितने बज गए राधा? क्या कहा, तीन? सरदी में तो दिन का पता ही नहीं लगता है। बजे तीन ही हैं और धूप सारी छत पर से ऐसे सिमट गई मानो शाम हो गई हो।'' फिर एकाएक जैसे ख़याल आया कि यह तो भाभी के प्रश्न का उत्तर नहीं हुआ तो ज़रा ठंडे स्वर में बोलीं– ''मुहरत तो पाँच बजे का है, जाऊँगी तो चार बजे तक जाऊँगी, अभी तो तीन ही बजे हैं।'' बड़ी सावधानी से उन्होंने स्वर में लापरवाही का पुट दिया। बुआ छत पर से गली में नज़र फैलाए खड़ी थीं, उनके पीछे ही रस्सी पर धोती फैली

हुई थी, उसमें कलफ लगा था और अबरक छिड़का हुआ था। अबरक के बिखरे हुए कण रह–रहकर धूप में चमक जाते थे, ठीक वैसे ही जैसे किसी को भी गली में घुसता देख बुआ का चेहरा चमक उठता था।

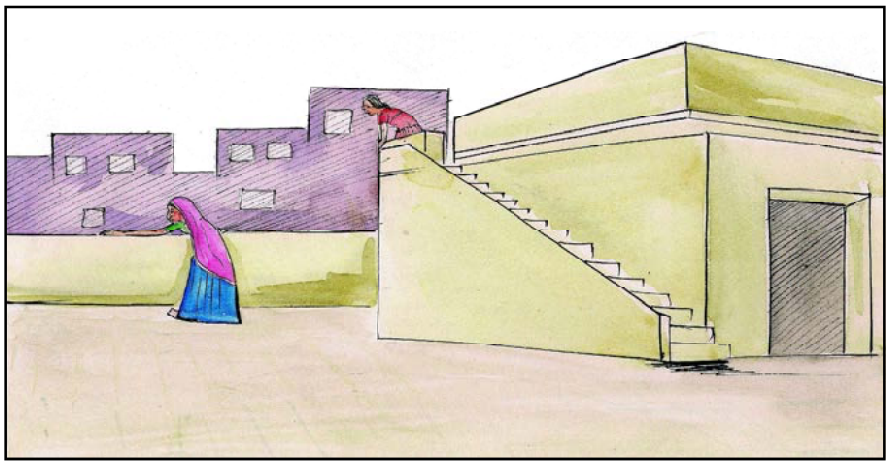

सात बजे के धुँधलके में राधा ने ऊपर से देखा की दीवार से सटी गली की ओर मुँह किए एक छाया–मूर्ति दिखाई दी। उसका मन भर आया। बिना कुछ पूछे इतना ही कहा, ''बुआ! सर्दी में खड़ी–खड़ी यहाँ क्या कर रही हो? आज खाना नहीं बनेगा क्या? सात तो बज गए।''

''जैसे एकाएक नींद में से जागते हुए बुआ ने पूछा– ''क्या कहा! सात बज गए?'' फिर जैसे अपने से ही बोलते हुए पूछा, ''पर सात कैसे बज सकते हैं, मुहरत तो पाँच बजे का था।'' और फिर एकाएक ही सारी स्थिति को समझते हुए, स्वर को भरसक संयत बनाकर बोलीं–''अरे, खाने का क्या है, अभी बना लूँगी। दो जनों का तो खाना है, क्या खाना और क्या पकाना।''

फिर उन्होंने सूखी साड़ी को उतारा। नीचे जाकर अच्छी तरह उसकी तह की, धीरे–धीरे हाथों से चूड़ियाँ खोलीं, थाली में सजाया हुआ सारा सामान उठाया और सारी चीज़ें बड़े जतन से अपने एकमात्र संदूक में रख दीं।

और फिर बड़े ही बुझे दिल से अँगीठी जलाने बैठीं।

शब्दार्थ

परित्यक्ता – त्यागी हुई स्त्री; **तजकर** – छोड़कर, त्यागकर; **अबाध** – बिना किसी रोक–टोक के; **शिथिल** – सुस्त; **गुरूर**– घमंड; **भरमाना** – भ्रम में डालना; **भरसक** – यथा संभव, जहाँ तक हो सके; **पुलकित** – खुश होते हुए; **कलदार** – सरकारी टकसाल में बना हुआ नया रूपया; **अबरक** – एक तरह का चमकदार पदार्थ।

अभ्यास

पाठ से

1. पाँच रुपए और अँगूठी को आँचल में बाँधते समय बुआ के मन में क्या विचार चल रहे थे?
2. सोमा बुआ अपने पति की प्रतीक्षा क्यों नहीं करती थीं?
3. सोमा बुआ किशोरी लाल के घर मुंडन के कार्यक्रम में पहुँची तो उन्होंने वहाँ क्या हालात देखे? अपने शब्दों में लिखिए।
4. बुआ की सोच और नए फैशनवाली सोच में आप किस तरह का अंतर पाते हैं?
5. ''मानो वे दूसरे के घर में नहीं अपने ही घर में काम कर रही हों'' इस पंक्ति के माध्यम से सोमा बुआ के व्यक्तित्व के बारे में कौन–कौन सी बातें सामने आती हैं?
6. कहानी में आए पात्र सोमा बुआ के पति, राधा भाभी और विधवा ननद के व्यक्तित्व पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
7. आपके अनुसार कहानी का शीर्षक 'अकेली' क्यों है?

पाठ से आगे

1. समधी के यहाँ से बुआ को बुलावा क्यों नहीं आया होगा? आपके अनुसार इसके क्या–क्या कारण हो सकते हैं? लिखिए।
2. यदि समधी के यहाँ से बुलावा आ जाता तो कहानी क्या होती?
3. ''नई लाल–हरी चूड़ियाँ पहनने के बाद बुआ सारे दिन हाथ को साड़ी के आँचल से ढँके–ढँके फिरीं।'' बुआ ने ऐसा क्यों किया होगा?
4. शादी–विवाह जैसे सामाजिक समारोहों में अक्सर व्यक्ति अपनी हैसियत से अधिक खर्च करता है और आर्थिक बोझ में दब जाता है। आपके अनुसार यह कहाँ तक उचित है?

भाषा के बारे में

अनुनासिक (ँ) : स्वरों का उच्चारण करते समय वायु को केवल मुख से ही बाहर निकाला जाता है। उच्चारण करते समय जब वायु को मुख के साथ–साथ नाक से भी बाहर निकाला जाए तो वहाँ अनुनासिक स्वर हो जाता है। अनुनासिकता का हिंदी में चिह्न चन्द्रबिन्दु (ँ) है। मानक वर्तनी में इसके लेखन सम्बन्धी नियम इस प्रकार हैं–

(क) जिन स्वरों अथवा उनकी मात्राओं का कोई भी हिस्सा यदि शिरोरेखा से बाहर नहीं निकलता है तो अनुनासिकता के लिए चन्द्रबिन्दु (ँ) लगाया जाना चाहिए; जैसे साँस, चाँद, गाँव, कुआँ, उँगली, पूँछ आदि।

(ख) जिन स्वरों अथवा उनकी मात्राओं का यदि कोई भी हिस्सा शिरोरेखा के ऊपर निकला रहता है तो वहाँ अनुनासिकता को भी बिंदु से ही लिखना चाहिए; जैसे चोंच, कोंपल, मैं, में, केंचुआ, गेंद, सौंफ आदि।

अनुस्वार (ं) : हिंदी में अनुस्वार एक नासिक्य व्यंजन है, जिसे (ं) से लिखा जाता है। इसे प्रायः स्वर या व्यंजन के ऊपर लगाया जाता है। अनुस्वार का अपना कोई विशेष स्वरूप नहीं होता, बल्कि इसका उच्चारण इसके आगे आनेवाले व्यंजन से प्रभावित होता है। जैसे कि–

कवर्ग के पूर्व (ङ्) – पङ्कज – पंकज, गङ्गा – गंगा

चवर्ग के पूर्व (ञ्) – चञ्चल – चंचल, पञ्छी – पंछी

टवर्ग के पूर्व (ण्) – डण्डा – डंडा, कण्ठी – कंठी

तवर्ग के पूर्व (न्) – पन्त – पंत, अन्धा – अंधा

पवर्ग के पूर्व (म्) – चम्पक – चंपक, खम्भा – खंभा

इसके अतिरिक्त सभी वर्णों के पहले आने पर अनुस्वार का उच्चारण पंचम वर्ण में से **न्** या **म्** किसी एक वर्ण की भाँति हो सकता है। जैसे संवाद में 'म्' की तरह और संसार में 'न्' की तरह। अनुस्वार के विपरीत आप पाएँगे कि अनुनासिक का स्वरूप स्थिर रहता है।

1. इस पाठ में अनुनासिक ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए दो तरह के संकेतों चन्द्र बिंदु (ँ) और बिंदु (ं) का उपयोग हुआ है और अनुस्वार को व्यक्त करने के लिए बिंदु (ं) का उपयोग कई जगह हुआ है। कक्षा में समूह बनाकर नीचे दी गई सारणी में ऐसे शब्दों को खोज कर लिखिए।

अनुनासिक (ँ)	अनुनासिक (ं)	अनुस्वार (ं)
पाँच	पापड़ों	पंकज

2. पाठ में आए अनुनासिक और अनुस्वार के उपयोग वाले शब्दों के अलावा ऐसे शब्दों का चयन कर एक सूची बनाइए, जिसमें अनुनासिक और अनुस्वार का प्रयोग हुआ हो।

अनुनासिक (ँ)	अनुस्वार (ं)

3. घर–बार, मिलना–जुलना, आस–पास, अभी–अभी आदि इस तरह के शब्द अक्सर प्रयोग में आते हैं, इस कहानी में भी आए हैं। कक्षा में समूह बनाकर इसी प्रकार के शब्दों को ढूँढ़कर सूची बनाइए एवं उन्हें निम्नांकित सारणी के अनुसार वर्गीकृत कीजिए।

दोनों समान शब्द	परस्पर विरोधी शब्द	विपरित लिंगी शब्द	पहला सार्थक दूसरा निरर्थक शब्द	दोनों निरर्थक शब्द
धीरे–धीरे	आना–जाना	पति–पत्नी	चाय–वाय	आँय–बाँय

4. ''समधियों का मामला ठहरा, सो भी पैसेवाले''।

(क) यहाँ 'ठहरा' शब्द से क्या आशय है?

(ख) ''ठहरा'' शब्द के अलग–अलग अर्थ बताने वाले वाक्य लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. कहानी के अंत को दर्शाते हुए चित्र बनाइए और उस पर अपने विचार लिखिए।
2. विवाह के अवसर पर गीत गाए जाते हैं। इसी तरह से विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले गीतों का अपना एक संकलन तैयार कीजिए। घर के बड़ों से बातचीत करके अपने पसंद के किसी एक गीत को सीखकर समूह में गाइए।
3. आपने 'अकेली' कहानी पढ़ी। इस कहानी में निहित मूल भावों से मिलती–जुलती और भी कई कहानियाँ हैं, यथा– प्रेमचंद की 'बूढ़ी काकी', भीष्म साहनी की 'चीफ़ की दावत' आदि। शिक्षक की सहायता से इन कहानियों को पढ़कर निम्न आधारों पर चर्चा कीजिए–

   (क) पात्र
   (ख) सामाजिक स्थिति
   (ग) शब्दों का चयन
   (घ) भाषा आदि।

BRKL7T

पाठ 3.3 : जामुन का पेड़

कृश्न चंदर

__कृश्न चंदर__ का जन्म वर्तमान पाकिस्तान में स्थित वजीराबाद, गुजराँवाला में 23 नवंबर सन् 1914 ई. को हुआ। उर्दू और हिंदी के मशहूर कहानीकार के रूप में उनके कई उपन्यास और कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। उनके प्रसिद्ध उपन्यास __एक गधे की आत्मकथा__ का सोलह से ज्यादा भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद हो चुका है। लघुकथा __अन्नदाता__ पर ख़्वाजा अहमद अब्बास ने __'धरती के लाल'__ नाम से फिल्म भी बनाई है। इनके द्वारा लिखी गई कई कहानियों पर फिल्मों का निर्माण भी हुआ है। 1969 में उन्हें पद्मभूषण से भी सम्मानित किया गया। 8 मार्च सन् 1977 ई. को उनका देहावसान हो गया। संकलित कहानी उनके कहानी संग्रह __फूल और पत्थर__ से ली गई है।

रात को बड़े ज़ोर का झक्कड़ चला। सेक्रटेरियेट के लॉन में जामुन का एक दरख़्त गिर पड़ा। सवेरे जब माली ने देखा तो उसे मालूम हुआ कि पेड़ के नीचे एक आदमी दबा पड़ा है।

माली दौड़ा–दौड़ा चपरासी के पास गया, चपरासी दौड़ा–दौड़ा क्लर्क के पास गया, क्लर्क दौड़ा–दौड़ा सुपरिटेंडेंट के पास गया। सुपरिटेंडेंट दौड़ा–दौड़ा बाहर लॉन में आया। मिनटों में गिरे हुए पेड़ के नीचे दबे हुए आदमी के चारों ओर भीड़ इकट्ठी हो गई।

''बेचारा, जामुन का पेड़! कितना फलदार था।'' एक क्लर्क बोला।

''और इसकी जामुनें कितनी रसीली होती थीं,'' दूसरा क्लर्क याद करते हुए बोला ।

''मैं फलों के मौसम में झोली भरकर ले जाता था। मेरे बच्चे इसकी जामुनें कितनी खुशी से खाते थे!'' तीसरा क्लर्क लगभग रुआँसा होकर बोला।

''मगर यह आदमी?'' माली ने दबे हुए आदमी की तरफ़ इशारा किया।

''हाँ, यह आदमी!'' सुपरिटेंडेंट सोच में पड़ गया।

''पता नहीं ज़िंदा है कि मर गया?'' एक चपरासी ने पूछा।

''मर गया होगा, इतना भारी पेड़ जिसकी पीठ पर गिरे, वह बच कैसे सकता है ?'' दूसरा चपरासी बोला।

''नहीं मैं ज़िंदा हूँ।'' दबे हुए आदमी ने बड़ी मुश्किल से कराहते हुए कहा।

''ज़िंदा है।'' एक क्लर्क ने आश्चर्य से कहा।

''दरख़्त को हटाकर इसे जल्दी से निकाल लेना चाहिए,'' माली ने सुझाव दिया।

''मुश्किल मालूम होता है।'' एक कामचोर और मोटा चपरासी बोला, ''पेड़ का तना बहुत भारी और वज़नी है।''

''मुश्किल क्या है,'' माली बोला, ''अगर सुपरिटेंडेंट साहब हुक्म दें, तो पन्द्रह–बीस माली, चपरासी और क्लर्क लगाकर पेड़ के नीचे से दबे हुए आदमी को निकाला जा सकता है।''

''माली ठीक कहता है'', बहुत से क्लर्क एक साथ बोल पड़े, ''लगाओ ज़ोर हम तैयार हैं।''

एकदम बहुत से लोग पेड़ को उठाने को तैयार हो गए।

''ठहरो!'' सुपरिटेंडेंट बोला, ''मैं अंडर सेक्रेटरी से पूछ लूँ।''

सुपरिटेंडेंट अंडर सेक्रेटरी के पास गया। अंडर सेक्रेटरी डिप्टी सेक्रेटरी के पास गया। डिप्टी सेक्रेटरी ज्वाइंट सेक्रेटरी के पास गया। ज्वाइंट सेक्रेटरी चीफ़ सेक्रेटरी के पास गया। चीफ़ सेक्रेटरी मिनिस्टर के पास गया। मिनिस्टर ने चीफ़ सेक्रेटरी से कुछ कहा। चीफ़ सेक्रेटरी ने ज्वाइंट सेक्रेटरी से कुछ कहा। ज्वाइंट सेक्रेटरी ने डिप्टी सेक्रेटरी से कहा, डिप्टी सेक्रेटरी ने अंडर सेक्रेटरी से कहा। फ़ाइल चलती रही– इसी में आधा दिन बीत गया।

दोपहर के खाने पर दबे हुए आदमी के चारों ओर बहुत भीड़ हो गई थी। लोग तरह–तरह की बातें कर रहे थे। कुछ मनचले क्लर्कों ने समस्या को खुद ही सुलझाना चाहा। वे हुकूमत के फ़ैसले का इंतजार किए बिना पेड़ को अपने आप ही हटा देने का निश्चय कर रहे थे कि इतने में सुपरिटेंडेंट फ़ाइल लिए भागा–भागा आया। बोला :

''हम लोग खुद इस पेड़ को यहाँ से नहीं हटा सकते। हम लोग व्यापार विभाग से संबंधित हैं, और यह पेड़ की समस्या है, जो कृषि विभाग के अधीन है। मैं इस फ़ाइल को अर्जेंट मार्क करके कृषि विभाग में भेज रहा हूँ। वहाँ से उत्तर आते ही इस पेड़ को हटवा दिया जाएगा।''

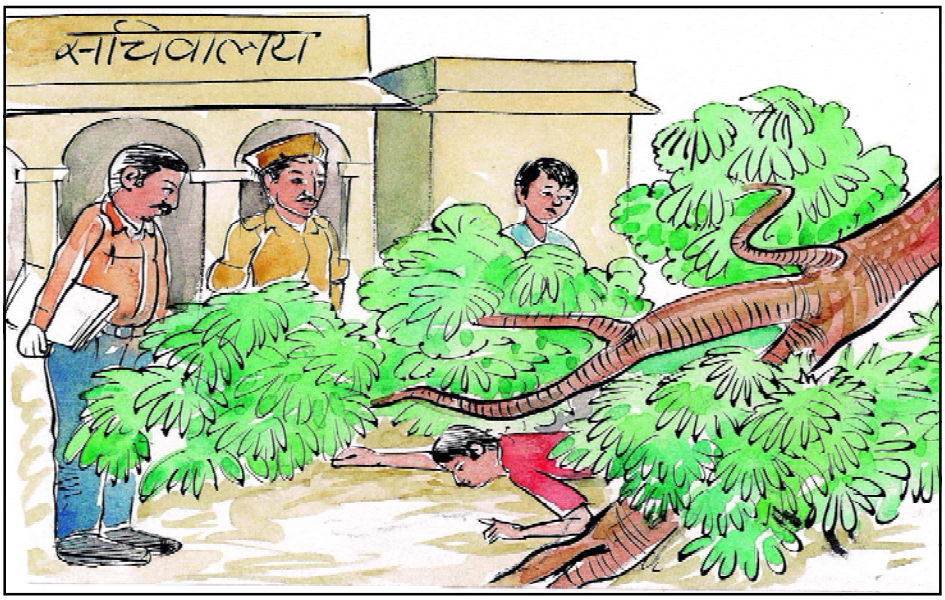

दूसरे दिन कृषि विभाग से उत्तर आया कि पेड़ व्यापार विभाग के लॉन में गिरा है, इसलिए इस पेड़ को हटवाने की ज़िम्मेदारी व्यापार विभाग की है।

यह उत्तर पढ़ कर व्यापार विभाग को गुस्सा आ गया। उसने फ़ौरन लिखा कि पेड़ों को हटवाने या न हटवाने की ज़िम्मेदारी कृषि विभाग पर लागू होती है, व्यापार विभाग का इससे कोई संबंध नहीं।

दूसरे दिन भी फ़ाइल चलती रही। शाम को जवाब आया। हम मामले को हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेंट के हवाले कर रहे हैं, क्योंकि यह एक फलदार पेड़ का मामला है और एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट केवल अनाज और खेतीबाड़ी के मामलों में फ़ैसला करने का हकदार है। जामुन का पेड़ एक फलदार पेड़ है, इसलिए यह पेड़ हार्टीकल्चर डिपार्टमेंट के अंतर्गत आता है।

रात को माली ने दबे हुए आदमी को दाल–भात खिलाया। यद्यपि लॉन के चारों तरफ़ पुलिस का पहरा था कि कहीं लोग कानून को अपने हाथ में लेकर पेड़ को खुद ही हटवाने की कोशिश न करें। मगर एक पुलिस कॉन्स्टेबल को दया आ गई और उसने माली को दबे हुए आदमी को खाना खिलाने की इजाजत दे दी।

माली ने दबे हुए आदमी से कहा, ''तुम्हारी फ़ाइल चल रही है। आशा है कल तक फ़ैसला हो जाएगा।''

दबा हुआ आदमी कुछ नहीं बोला।

माली ने पेड़ के तने को ध्यान से देखकर कहा, ''अच्छा हुआ कि तना तुम्हारे कूल्हे पर गिरा, अगर कमर पर गिरता तो रीढ़ की हड्डी टूट जाती।''

दबा हुआ आदमी फिर भी कुछ नहीं बोला।

माली ने फिर कहा, ''तुम्हारा यहाँ कोई वारिस है तो मुझे उसका अता–पता बताओ, मैं उन्हें खबर देने की कोशिश करूँगा।''

''मैं लावारिस हूँ'' दबे हुए आदमी ने बड़ी मुश्किल से कहा।

माली खेद करते हुए वहाँ से हट गया।

तीसरे दिन हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेंट का जवाब आ गया। बड़ा कड़ा जवाब था, और व्यंग्यपूर्ण।

हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेंट का सेक्रेटरी साहित्य प्रेमी आदमी जान पड़ता था। उसने लिखा था, ''आश्चर्य है, इस समय जब हम 'पेड़ लगाओ स्कीम' ऊँचे स्तर पर चला रहे हैं, हमारे देश में ऐसे सरकारी अफसर मौजूद हैं जो पेड़ों को काटने का सुझाव देते हैं, और वह भी एक फलदार पेड़ को, और वह भी जामुन के पेड़ को, जिसके फल जनता बड़े चाव से खाती है? हमारा विभाग किसी हालत में इस फलदार वृक्ष को काटने की इजाज़त नहीं दे सकता।''

''अब क्या किया जाए?'' इस पर एक मनचले ने कहा, ''अगर पेड़ काटा नहीं जा सकता तो इस आदमी को ही काटकर निकाल लिया जाए।''

''यह देखिए''– उस आदमी ने इशारे से बताया, ''अगर इस आदमी को बिल्कुल बीच में से अर्थात् धड़ से काटा जाए तो आधा आदमी इधर से निकल जाएगा और आधा उधर से बाहर आ जाएगा और पेड़ वहीं का वहीं रहेगा।''

''मगर इस तरह से तो मैं मर जाऊँगा।'' दबे हुए आदमी ने आपत्ति प्रकट की।

''यह भी ठीक कहता है'' एक क्लर्क बोला।

आदमी को काटने वाली युक्ति प्रस्तुत करने वाले ने भरपूर विरोध किया, ''आप जानते नहीं हैं? आजकल प्लास्टिक सर्जरी कितनी उन्नति कर चुकी है। मैं समझता हूँ– अगर इस आदमी को बीच में से काटकर निकाल लिया तो प्लास्टिक सर्जरी से धड़ के स्थान पर इस आदमी को फिर से जोड़ा जा सकता है।''

इस बार फ़ाइल को मेडिकल डिपार्टमेंट में भेजा गया। मेडिकल डिपार्टमेंट ने फ़ौरन एक्शन लिया, और जिस दिन फाइल उनके विभाग में पहुँची उसके दूसरे ही दिन उन्होंने अपने विभाग का सबसे योग्य प्लास्टिक सर्जन छानबीन के लिए भेज दिया। सर्जन ने दबे हुए आदमी को अच्छी तरह टटोलकर, उसका स्वास्थ्य देखकर खून का दबाव देखा, नाड़ी की गति को परखा, दिल और फेफड़ों की जाँच करके रिपोर्ट भेज दी कि इस आदमी का प्लास्टिक ऑपरेशन तो हो सकता है और ऑपरेशन सफल भी होगा, मगर आदमी मर जाएगा।

इसलिए यह फ़ैसला भी रद्द कर दिया गया।

रात को माली ने दबे हुए आदमी के मुँह में खिचड़ी डालते हुए उसे बताया कि अब मामला ऊपर चला गया है, सुना है कि कल सेक्रेटेरिएट के सारे सेक्रेटरियों की मीटिंग होगी। उसमें तुम्हारा केस भी रखा जाएगा। उम्मीद है, सब काम ठीक हो जाएगा।

दबा हुआ आदमी एक आह भरकर धीरे से बोला :

''ये तो माना कि तग़ाफ़ुल न करोगे,
लेकिन ख़ाक हो जाएँगे हम तुमको ख़बर होने तक।''

माली ने अचंभे से मुँह में उँगली दबा ली, और चकित भाव से बोला, ''क्या तुम शायर हो?''

दबे हुए आदमी ने धीरे से सिर हिला दिया।

दूसरे दिन माली ने चपरासी को बताया, चपरासी ने क्लर्क को, क्लर्क ने हेड–क्लर्क को, थोड़ी ही देर में सेक्रिटेरिएट में यह अफ़वाह फैल गई कि दबा हुआ आदमी शायर है बस, फिर क्या था, लोगों का झुंड का झुंड शायर को देखने के लिए उमड़ पड़ा। इसकी चर्चा शहर में भी फैल गई और शाम तक गली–गली से शायर जमा होने शुरू हो गए। सेक्रिटेरिएट का लॉन भाँति–भाँति के शायरों से भर गया और दबे हुए आदमी के चारों ओर मुशायरे का सा वातावरण उत्पन्न हो गया। सेक्रेटेरिएट के कई क्लर्क और अंडर सेक्रेटरी तक, जिन्हें साहित्य और कविता से लगाव था, रुक गए। कुछ शायर दबे हुए आदमी को अपनी ग़ज़लें और नज़्में सुनाने लगे। कई क्लर्क उसको अपनी ग़ज़लों को दुरस्त करने पर मजबूर करने लगे।

जब यह पता चला कि दबा हुआ आदमी एक शायर है, तो सेक्रेटेरिएट की सब–कमेटी ने फैसला किया कि चूँकि दबा हुआ आदमी एक शायर है, इसलिए इस फ़ाइल का संबंध न एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट से है, न हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेंट से, बल्कि सिर्फ कल्चरल डिपार्टमेंट से है। कल्चरल डिपार्टमेंट से अनुरोध किया गया कि जल्द से जल्द मामले का फ़ैसला करके अभागे शायर को इस फलदार पेड़ से छुटकारा दिलाया जाए।

फ़ाइल कल्चरल डिपार्टमेंट के अनेक विभागों से गुज़रती हुई साहित्य अकादमी के सेक्रेटरी के पास पहुँची। बेचारा सेक्रेटरी उसी समय अपनी गाड़ी में सवार होकर सेक्रेटेरिएट पहुँचा और दबे हुए आदमी से इंटरव्यू लेने लगा।

''तुम शायर हो?'' उसने पूछा।

''जी हाँ !'' दबे आदमी ने जवाब दिया।

''क्या उपनाम रखते हो?''

''ओस!''

''ओस?'' सेक्रेटरी ज़ोर से चीखा, ''क्या तुम वही ''ओस'' हो जिसका कविता संग्रह ''ओस के फूल'' अभी हाल में प्रकाशित हुआ है?''

दबे हुए शायर ने इक़रार में सिर हिलाया।

''क्या तुम हमारी अकादमी के मेंबर हो?'' सेक्रेटरी ने पूछा।

''नहीं।''

''आश्चर्य है,'' सेक्रेटरी ज़ोर से चीखा, ''इतना बड़ा शायर– 'ओस के फूल' का लेखक और हमारी अकादमी का मेंबर नहीं है। उफ़–उफ़, कैसी भूल हो गई हमसे, कितना बड़ा शायर और कैसी अँधेरी गुमनामी में दबा पड़ा है।''

''गुमनामी नहीं– एक दरख़्त के नीचे दबा पड़ा हूँ, कृपया मुझे इस पेड़ के नीचे से निकालिए।''

''अभी बंदोबस्त करता हूँ।'' सेक्रेटरी फौरन बोला और फौरन उसने अपने विभाग में रिपोर्ट की।

दूसरे दिन सेक्रेटरी भागा–भागा शायर के पास आया और बोला, ''मुबारक हो, मिठाई खिलाओ, हमारी सरकारी साहित्य अकादमी ने तुम्हें अपनी केंद्रीय शाखा का मेंबर चुन लिया है, यह लो चुनाव पत्र।''

''मगर मुझे इस पेड़ के नीचे से तो निकालो'', दबे हुए आदमी ने कराहकर कहा। उसकी साँस बड़ी

मुश्किल से चल रही थी और उसकी आँखों से मालूम होता था कि वह घोर पीड़ा और यातना में पड़ा है।

''यह हम नहीं कर सकते।'' सेक्रेटरी ने कहा, ''और जो हम कर सकते थे, वह हमने कर दिया। बल्कि हम यहाँ तक तो कर सकते हैं कि अगर तुम मर जाओ तो तुम्हारी बीवी को वज़ीफा दे सकते हैं, अगर तुम दरख्वास्त दो तो हम वह भी कर सकते हैं।''

''मैं अभी जीवित हूँ।'', शायर रुक–रुक कर बोला, ''मुझे ज़िंदा रखो।''

''मुसीबत यह है'', सरकारी साहित्य अकादमी का सेक्रेटरी हाथ मलते हुए बोला, ''हमारा विभाग सिर्फ कल्चर से संबंधित है। उसके लिए हमने फ़ॉरेस्ट डिपार्टमेंट को लिख दिया और अर्जेंट लिखा है।

शाम को माली ने आकर दबे हुए आदमी को बताया, ''कल फ़ॉरेस्ट डिपार्टमेंट के आदमी आकर इस पेड़ को काट देंगे और तुम्हारी जान बच जाएगी।''

माली बहुत खुश था। दबे हुए आदमी का स्वास्थ्य जबाव दे रहा था, मगर वह किसी न किसी तरह अपने जीवन के लिए लड़े जा रहा था। कल तक..... सवेरे तक..... किसी न किसी तरह उसे जीवित रहना है।

दूसरे दिन जब फ़ॉरेस्ट डिपार्टमेंट के आदमी आरी, कुल्हाड़ी लेकर पहुँचे तो उनको पेड़ काटने से रोक दिया गया। मालूम हुआ कि विदेश–विभाग से हुक़्म आया था कि इस पेड़ को न काटा जाए। कारण यह था कि इस पेड़ को दस साल पहले पिटोनिया राज्य के प्रधानमंत्री ने सेक्रेटेरिएट के लॉन में लगाया था। अब अगर यह पेड़ काटा गया तो इस बात का काफ़ी अंदेशा था कि पिटोनिया सरकार से हमारे संबंध सदा के लिए बिगड़ जाएँगे।''

''मगर एक आदमी की जान का सवाल है'', एक क्लर्क चिल्लाया।

''दूसरी ओर दो राज्यों के संबंधों का सवाल है'', दूसरे क्लर्क ने पहले क्लर्क को समझाया, ''और यह भी तो समझो कि पिटोनिया सरकार हमारे राज्य को कितनी सहायता देती है– क्या उनकी मित्रता की ख़ातिर एक आदमी के जीवन का भी बलिदान नहीं कर सकते?''

''शायर को मर जाना चाहिए?''

''निःसंदेह।''

अंडर सेक्रेटरी ने सुपरिटेंडेंट को बताया, ''आज सवेरे प्रधानमंत्री दौरे से वापस आ गए हैं। आज चार बजे विदेश विभाग इस पेड़ की फ़ाइल उनके सामने पेश करेगा, जो वे फ़ैसला लेंगे वही सबको स्वीकार होगा।''

शाम के पाँच बजे स्वयं सुपरिटेंडेंट शायर की फ़ाइल लेकर उसके पास गया, ''सुनते हो?'', आते ही वह खुशी से फ़ाइल को हिलाते हुए चिल्लाया, ''प्रधानमंत्री ने इस पेड़ को काटने का हुक्म दे दिया है और इस घटना की सारी अंतर्राष्ट्रीय ज़िम्मेदारी अपने सर ले ली है कल यह पेड़ काट दिया जाएगा और तुम इस संकट से छुटकारा हासिल कर लोगे। सुनते हो, आज तुम्हारी फ़ाइल मुकम्मल हो गई।''

मगर शायर का हाथ ठंडा था। आँखों की पुतलियाँ निर्जीव थीं और चींटियों की एक लंबी पंक्ति उसके मुँह में जा रही थी.....।

उसके जीवन की फ़ाइल मुकम्मल हो चुकी थी।

शब्दार्थ

झक्कड़ – आँधी; **दरख़्त** – पेड़; **हुकूमत** – शासन; **इजाज़त** – अनुमति; **लावारिस** – अनाथ; **तग़ाफ़ुल** – धोखा करना; **ख़ाक हो जाना** – राख हो जाना, नष्ट हो जाना; **गुमनामी** – जिसकी कोई पहचान न हो; **दरख़्वास्त** – निवेदन, अर्जी; मुक़म्मल – पूर्ण, पूरा।

अभ्यास

पाठ से

1. जामुन के पेड़ के नीचे दबे आदमी को आधा दिन बीत जाने तक भी क्यों नहीं निकाला जा सका?
2. आदमी को पेड़ के नीचे से निकालने के लिए फ़ाइल किन–किन विभागों में घूमती रही?
3. कृषि विभाग ने पेड़ हटाने का मामला हॉर्टीकल्चर विभाग को सौंपने के पीछे क्या तर्क दिए?
4. पेड़ के नीचे दबे आदमी ने ग़ालिब का एक शे'र कहा। पाठ में खोजिए कि

   (क) वह शे'र क्या है?

   (ख) उसका क्या अर्थ है?

   (ग) उसने यह शे'र क्यों कहा?
5. ''उसके जीवन की फ़ाइल मुकम्मल हो चुकी थी।'' पंक्ति का क्या आशय है?
6. जामुन का पेड़ गिरने पर जब भीड़ इकट्ठी हुई तब क्लर्कों व माली की बातचीत में आप किस प्रकार का अंतर देखते हैं? उनकी बातचीत से उनके व्यक्तित्व के बारे में क्या पता चलता है?
7. प्रधानमंत्री ने इस घटना की सारी अंतर्राष्ट्रीय ज़िम्मेदारी अपने सर ले ली।'' इस पंक्ति में क्या व्यंग्य किया गया है?

पाठ से आगे

BS4DB4

1. जामुन के पेड़ को हटाने की जिम्मेदारी सभी विभाग एक दूसरे पर डालते रहे और किसी को भी आदमी को बचाने की चिंता नहीं थी। यह स्थिति हमारे व्यवस्था की कार्यप्रणाली के किस चरित्र को उजागर करती है?
2. आपके घर के सामने यदि पेड़ गिर जाए तो उसे हटाने के लिए आप क्या–क्या करेंगे?
3. यदि आप माली की जगह होते तो ऊपर के फैसले का इंतज़ार करते या नहीं? यदि हाँ तो क्यों और नहीं तो क्यों?
4. यदि पेड़ हटाने की फाइल को पर्यावरण विभाग, जल विभाग व शिक्षा विभाग को भेजना पड़े, तो वे विभाग पेड़ न हटाने के क्या तर्क देंगे?
5. आपके विचार से कहानी में मूल समस्या क्या है, पेड़ को हटाना या आदमी को निकालना? तर्क सहित अपना जवाब दीजिए।

भाषा के बारे में

BSD9CR

1. किसी भी भाषा में उसके संपर्क में आने वाली अन्य भाषाओं के शब्द सहज रूप से घुल–मिल जाते हैं। इस पाठ में ऐसे शब्दों का बहुतायत में प्रयोग हुआ है, जैसे– केस, क्लर्क, हुकूमत आदि। पाठ में ऐसे शब्दों को पहचानने का प्रयास करें जो आपको दूसरी भाषाओं के जान पड़ते हों। साथ ही यह भी लिखिए कि वे किस भाषा से लिए गए हैं?
2. इस कहानी में कई प्रशासनिक विभागों और पदानुक्रमों का जिक्र हुआ है, उन्हें छाँटकर उनके हिंदी नाम लिखिए।
3. किसी भी भाषा में संज्ञा के बहुवचन बनाने के अपने नियम होते हैं। हिंदी भाषा में किसी भी शब्द को बहुवचन में बदलने के भी कुछ नियम हैं। जैसे कि–

   (क) संज्ञा को कर्ता के स्थान पर बहुवचन में बदलने के नियम

   (ख) संज्ञा का संबोधन के रूप में उपयोग पर बहुवचन के नियम

   (ग) संज्ञा के अन्यत्र, जैसे कि विभक्ति के साथ प्रयोग में बहुवचन के नियम

   इसी तरह संज्ञा में लिंग और अंतिम ध्वनि भी उसे बहुवचन में परिवर्तित करने को प्रभावित करती है। इस आधार पर विभिन्न ध्वनियों से समाप्त होने वाले तथा विभिन्न लिंग वाले शब्दों की कल्पना कर उनके बहुवचन रूपों को लिखिए। इस आधार पर संज्ञा को बहुवचन में बदलने के नियम बताइए।

संज्ञा को बहुवचन में बदलने के आधार

वचन बदलने का आधार	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	लड़का	लड़के
विभक्ति के साथ	लड़के ने	लड़कों ने
संबोधन के साथ	ए लड़के!	ए लड़को!

योग्यता विस्तार

1. हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित व्यंग्य ''भोलाराम का जीव'' में भी व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया गया है। इसे पुस्तकालय से या अपने शिक्षकों की मदद से पढ़िए एवं कक्षा में चर्चा कीजिए।

2. प्रोजेक्ट कार्य–

   पाठ में कई प्रशासनिक कार्यालयों के नामों का उल्लेख हुआ है। इसी तरह–

   (क) आपके आसपास कौन–कौन से प्रशासनिक कार्यालय हैं? इनकी सूची तैयार कीजिए।

   (ख) अपने द्वारा बताए गए कार्यालयों में से किन्हीं तीन कार्यालयों में कौन–कौन से पद हैं, उनके हिंदी व अंग्रेजी (दोनों भाषाओं) में नाम लिखिए। अपने इस प्रोजेक्ट कार्य को विद्यालय/कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

BSM5EE

पाठ 3.4 : रीढ़ की हड्डी

जगदीश चंद्र माथुर

*सुपरिचित नाटककार **जगदीश चंद्र माथुर** का जन्म सन् 16 जुलाई 1917 ई. को उत्तर प्रदेश के खुर्जा, ज़िला बुलंदशहर में हुआ। उन्होंने ऐतिहासिक और सामाजिक पृष्ठभूमि पर आधारित नाटक लिखे हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ **भोर का तारा, ओ मेरे सपने** (एकांकी), **शारदीया कोणार्क, पहला राजा** (नाटक), **जिन्होंने जीना सीखा** तथा **दस तस्वीरें** (रेखाचित्र) आदि हैं। जगदीश चंद्र माथुर का निधन सन् 14 मई 1978 ई. को हुआ।*

पात्र परिचय

उमा	:	लड़की
रामस्वरूप	:	लड़की का पिता
प्रेमा	:	लड़की की माता
शंकर	:	लड़का
गोपाल प्रसाद	:	लड़के का बाप
रतन	:	रामस्वरूप का नौकर

(मामूली तरह से सजा हुआ एक कमरा। अंदर के दरवाजे में आते हुए जिन महाशय की पीठ नजर आती है वह अधेड़ उम्र के मालूम होते हैं। एक तख्त को पकड़े हुए पीछे की ओर चलते–चलते कमरे में आते हैं। तख्त का दूसरा सिरा उनके नौकर ने पकड़ रखा है।)

रामस्वरूप : अबे, धीरे–धीरे चल। . . . अबे, तख्त को उधर मोड़ दे . . उधर।

. . . बस । (तख्त के रखे जाने की आवाज आती है।)

नौकर : बिछा दूँ साहब?

रामस्वरूप : (जरा तेज आवाज़) और क्या करेगा? परमात्मा के यहाँ जब अक्ल बँट रही थी, तो तू देर से पहुँचा था क्या? ....बिछा दूँ साब.....और ये पसीना किसलिए बहाया है?

नौकर : (तख्ता बिछाता है।) ही – ही –ही।

रामस्वरूप : हँसता क्यों है? . . . अबे, हमने भी जवानी में कसरत की है। कलसों से नहाता था लोटों की तरह। तख्त क्या चीज़ है?. . . उसे सीधा कर . . . यों बस। और सुन, बहू जी से दरी माँग ला, इसके ऊपर बिछाने के लिए। . . . चद्दर भी, कल जो धोबी के यहाँ से आई है, वही। (नौकर जाता है। बाबू साहब इस बीच में मेजपोश ठीक करते हैं। एक झाड़न से गुलदस्ता साफ करते कुर्सियों पर भी दो–चार हाथ लगाते हैं। सहसा घर की मालकिन प्रेमा का आना। गंदुमी रंग, छोटा कद, चेहरे की आवाज़ से ज़ाहिर होता है कि किसी काम में बहुत व्यस्त है। उनके पीछे–पीछे भीगी बिल्ली की तरह नौकर आ रहा है।. . . खाली हाथ। बाबू रामस्वरूप दोनों की तरफ देखने लगते हैं।)

प्रेमा : मैं कहती हूँ, तुम्हें इस वक्त धोती की क्या जरुरत पड़ गई? एक तो वैसे ही जल्दी–जल्दी में . . .

रामस्वरूप : धोती?

प्रेमा : हाँ, अभी तो बदलकर आए हो और फिर न जाने किसलिए . . .

रामस्वरूप : लेकिन धोती माँगी किसने?

प्रेमा : यही तो कह रहा था रतन?

रामस्वरूप : क्यों बे रतन, तेरे कानों में डाट लगी है? मैंने कहा था– धोबी के यहाँ से जो चादर आई है, उसे माँग ला। . . . अब तेरे लिए दिमाग कहाँ से लाऊँ। उल्लू कहीं का!

प्रेमा : अच्छा जा, पूजावाली कोठरी में लकड़ी के बाक्स के ऊपर धुले हुए कपड़े रखे हैं न, उन्हीं में से चद्दर उठा ला।

रतन : और दरी?

प्रेमा : दरी तो यहीं रखी है कोने में। वह पड़ी तो है।

रामस्वरूप : (दरी उठाते हुए।) और बीबी के कमरे में से हारमोनियम उठा ला और सितार भी। . . . जल्दी जा। (रतन जाता है। पति–पत्नी तख्त पर दरी बिछाते हैं।)

प्रेमा : लेकिन वह तुम्हारी लाड़ली बेटी तो मुँह फुलाए पड़ी है।

रामस्वरूप : मुँह फुलाए?. . . और तुम उसकी माँ किस मर्ज़ की दवा हो? जैसे–तैसे करके तो वे लोग पकड़ में आए हैं। अब तुम्हारी बेवकूफी से सारी मेहनत बेकार जाए, तो मुझे दोष मत देना।

प्रेमा : तो मैं ही क्या करुँ? सारे जतन करके हार गई। तुम्हीं ने उसे पढ़ा–लिखाकर इतना सर चढ़ा कर रखा है। मेरी समझ में तो ये पढ़ाई–लिखाई का जंजाल आता नहीं। अपना जमाना अच्छा था। 'आ' 'ई' पढ़ ली, गिनती सीख ली और बहुत हुआ तो स्त्री–सुबोधिनी पढ़ ली। सच पूछो तो स्त्री–सुबोधिनी में ऐसी–ऐसी बातें लिखी हैं. . . ऐसी बातें कि क्या तुम्हारी बी.ए, एम.ए की पढ़ाई में होगी और आजकल के लच्छन ही अनोखे हैं. . .

रामस्वरूप : ग्रामोफोन बाजा होता है न?

प्रेमा : क्यों?

रामस्वरूप : दो तरह का होता है। एक तो आदमी का बनाया हुआ। उसे एक बार चलाकर चाहे रोक लो और दूसरा परमात्मा का बनाया हुआ। उसका रिकार्ड एक बार चढ़ा तो रुकने का नाम नहीं।

प्रेमा : हटो भी! तुम्हें ठिठोली सूझती रहती है। यह तो होता नहीं कि उस अपनी उमा को राह पर लाते। अब देर ही कितनी रही है उन लोगों के आने में?

रामस्वरूप : तो हुआ क्या?

प्रेमा : तुम्हीं ने तो कहा था कि जरा ठीक–ठीक करके नीचे लाना। आजकल तो लड़की कितनी ही सुंदर हो, बिना टीम–टाम के भला कौन पूछता है? इसी मारे मैंने तो पौडर–वौडर उसके सामने रखा था। पर उसे तो इन चीजों से न जाने किस जन्म की नफरत है। मेरा कहना था कि आँचल से मुँह लपेट लेट गई; भई मैं तो बाज आई तुम्हारी इस लड़की से।

रामस्वरूप : न जाने कैसे इसका दिमाग है। वरना आजकल की लड़कियों के सहारे तो पौडर का कारोबार चलता है।

प्रेमा : अरे, मैंने तो पहले ही कहा था इंट्रेंस ही पास करा लेते– लड़की अपने हाथ रहती और उतनी परेशानी उठानी न पड़ती। पर तुम तो . . .

रामस्वरूप : (बात काटकर) चुप , चुप . . . (दरवाजे में झाँकते हुए) तुम्हें कतई अपनी जुबान पर काबू नहीं है। कल ही बता दिया था कि उन लोगों के सामने जिक्र और ही ढंग से होगा। मगर तुम तो अभी से सब कुछ उगले देती हो। उनके आने तक तो न जाने क्या हाल करोगी।

प्रेमा : अच्छा बाबा, मैं न बोलूँगी, जैसी तुम्हारी मर्जी हो, करना । बस मुझे तो मेरा काम बता दो।

रामस्वरूप : तो उमा को जैसे–तैसे तैयार कर दो। न सही पाउडर। वैसे कौन बुरी है। पान लेकर भेज देना उसे और नाश्ता तो तैयार है न? (रतन का आना) आ गया रतन ! . . . इधर ला, इधर बाजा नीचे रख दे। चद्दर खोल। पकड़ तो जरा उधर से। (चद्दर बिछाते हैं।)

प्रेमा : नाश्ता तो तैयार है। मिठाई तो वे लोग ज्यादा खाएँगे नहीं। कुछ नमकीन चीज़ें बना दी हैं। फल रखे हैं ही। चाय तैयार है और टोस्ट भी। मगर हाँ मक्खन? मक्खन तो आया ही नहीं।

रामस्वरूप : क्या कहा? मक्खन नहीं आया? तुम्हें भी किस वक्त याद आई है। जानती हो कि मक्खनवाले की दुकान दूर है, पर तुम्हें तो ठीक वक्त पर कोई बात सुझती ही नहीं। अब बताओ रतन मक्खन लाए कि यहाँ का काम करे। दफ्तर के चपरासी से कहा था आने के लिए सो नखरों के मारे . . .

प्रेमा : यहाँ का काम कौन–सा ज्यादा है? कमरा तो सब ठीक–ठाक है ही, बाजा–सितार आ ही गया।

नाश्ता यहाँ बराबरवाले कमरे में करना है– ट्रे में रखा हुआ है, सो तुम्हें पकड़ा दूँगी। एकाध चीज खुद ले आना। इतनी देर से रतन मक्खन ले ही आएगा। दो आदमी ही तो हैं।

रामस्वरूप : हाँ, एक तो बाबू गोपाल प्रसाद और दूसरा खुद लड़का है। देखो, उमा से कह देना कि जरा करीने से आए। ये लोग जरा ऐसे ही हैं। गुस्सा तो मुझे बहुत आता है, इनके दकियानूसी ख्यालों पर। खुद पढ़े–लिखे हैं, सभा–सोसाइटियों में जाते हैं, मगर लड़की चाहते हैं ऐसी कि ज्यादा पढ़ी–लिखी न हो।

प्रेमा : और लड़का?

रामस्वरूप : बताया तो था तुम्हें। बाप सेर है, तो लड़का सवा सेर। बी.एस.सी के बाद लखनऊ में ही तो पढ़ता है, मेडिकल कॉलेज में। कहता है कि शादी का सवाल दूसरा है तालीम का दूसरा। क्या करूँ मजबूरी है। मतलब अपना है, वरना इन लड़कों और बापों को ऐसी कोरी–कोरी सुनाता कि ये भी . . .

रतन : (जो अब तक दरवाजे के पास चुपचाप खड़ा हुआ था, जल्दी–जल्दी) बाबूजी, बाबूजी!

रामस्वरूप : क्या है?

रतन : कोई आए हैं।

रामस्वरूप : (दरवाजे से बाहर झाँककर, जल्दी से मुँह अंदर करते हुए) अरे, ऐ प्रेमा, वे आ भी गए (नौकर पर नजर पड़ते ही) और तू यहीं खड़ा है, बेवकूफ! गया नहीं मक्खन लाने? सब चौपट कर दिया। . . . अबे, उधर से, अंदर के दरवाजे से जा (नौकर अंदर जाता है) . . . और तुम जल्दी करो। प्रेमा, उमा को समझा देना थोड़ा–सा गा देगी। (प्रेमा जल्दी से अंदर की तरफ जाती है। उसकी धोती जमीन पर रखे हुए बाजे से अटक जाती है।)

प्रेमा : उँह! यह बाजा नीचे ही रख गया है। कम्बख्त।

रामस्वरूप : तुम जाओ, मैं रखे देता हूँ . . . . .जल्दी। (प्रेमा जाती है। बाबू रामस्वरूप बाजा उठाकर रखते हैं। किवाड़ों पर दस्तक।)

रामस्वरूप : हँ–हँ–हँ । आइए, आइए। . . .हँ–हँ–हँ।

(बाबू गोपाल प्रसाद और उसके लड़के शंकर का आना। आँखों से लोक–चतुराई टपकती है। आवाज से मालूम होता है काफी अनुभवी और फितरती महाशय है। उनका लड़का कुछ खीसे निपोरनेवाले नौजवानों में से है, आवाज पतली है और खिसियाहट भरी। झुकी कमर इसकी खासियत है।)

रामस्वरूप : (अपने दोनों हाथ मलते हुए) हँ. . . हँ इधर तशरीफ लाइए, इधर . . .। (बाबूगोपाल प्रसाद बैठते हैं मगर बेंत गिर पड़ता है।)

रामस्वरूप : यह बेंत! लाइए मुझे दीजिए कोने में रख देता हूँ। (सब बैठते हैं।) हँ–हँ! . . . मकान ढूँढ़ने में कुछ तकलीफ तो नहीं हुई?

गो. प्रसाद : (खँखारकर) नहीं, तांगेवाला जानता था। . . . और फिर हमें तो यहाँ आना ही था, रास्ता मिलता कैसे नहीं?

रामस्वरूप : हँ–हँ–हँ, यह तो आपकी बड़ी मेहरबानी है। मैंने आपको तकलीफ तो दी।

गो. प्रसाद : अरे नहीं साहब! जैसा मेरा काम, वैसा आपका काम, आखिर लड़के की शादी तो करनी ही है। बल्कि यों कहिए कि मैंने आपके लिए खासी परेशानी कर दी।

रामस्वरूप : हँ–हँ! यह लीजिए, आप तो मुझे काँटों में घसीटने लगे। हम तो आपके हँ–हँ सेवक ही हैं। हँ–हँ (थोड़ी देर बाद लड़के की तरफ मुखातिब होकर) और कहिए, शंकर बाबू, कितने दिनों की छुट्टियाँ हैं?

शंकर : जी, कालेज की छुट्टियाँ नहीं हैं। वीक एंड में चला आया था।

रामस्वरूप : आपके कोर्स खत्म होने में तो अब साल भर रहा होगा?

शंकर : जी, यही कोई साल दो साल।

रामस्वरूप : साल दो साल?

शंकर : हँ–हँ–हँ! . . . जी, एकाध साल का मार्जिन रखता हूँ. . . . . .

गो. प्रसाद : बात यह है साहब कि यह शंकर एक साल बीमार हो गया था। क्या बताएँ, इन लोगों को इसी उम्र में सारी बीमारियाँ सताती हैं। एक हमारा ज़माना था कि स्कूल से आकर दर्जनों कचौड़ियाँ उड़ा जाते थे, मगर फिर जो खाना खाने बैठते, तो वैसे–की–वैसी ही भूख।

रामस्वरूप : कचौड़ियाँ भी तो उस जमाने में पैसे की दो आती थीं।

गो. प्रसाद : जनाब, यह हाल था कि चार पैसे में ढेर–सी मलाई आती थी और अकेले दो आने की हजम करने की ताकत थी, अकेले! और अब तो बहुतेरे खेल वगैरह होते हैं स्कूलों में। तब न वॉलीबॉल जानता था, न टेनिस, न बैडमिंटन। बस, कभी हॉकी या कभी क्रिकेट कुछ लोग खेला करते थे। मगर मजाल कि कोई कह जाए कि यह लड़का कमजोर है। (शंकर और रामस्वरूप खीसे निपोरते हैं।)

रामस्वरूप : जी हाँ, जी हाँ! उस जमाने की बात ही दूसरी थी। हँ–हँ . . .

गो. प्रसाद : (जोशीली आवाज में) और पढ़ाई का यह हाल था कि एक बार कुर्सी पर बैठे कि बारह घंटे की सिटिंग हो गई, बारह घंटे! जनाब, मैं सच कहता हूँ कि उस जमाने का मैट्रिक भी वह अंग्रेजी लिखता था फर्राटे की, कि आजकल के एम. ए. भी मुकाबला नहीं कर सकते।

रामस्वरूप : जी हाँ, जी हाँ! यह तो है ही।

गो. प्रसाद : माफ कीजिएगा बाबू रामस्वरूप, उस ज़माने की जब याद आती है, अपने को ज़ब्त करना मुश्किल हो जाता है।

रामस्वरूप : हँ–हँ–हँ ! . . जी हाँ, वह तो रंगीन ज़माना था, रंगीन जमाना! हँ–हँ–हँ . . . (शंकर भी ही ही करता है।)

गो. प्रसाद : (एक साथ अपनी आवाज़ और तरीका बदलते हुए) अच्छा तो साहब, फिर बिजिनेस की बातचीत हो जाए।

रामस्वरूप : (चौंककर) बिजिनेस? बिजि. . . (समझकर) आह! . . .अच्छा–अच्छा! लेकिन जरा नाश्ता तो कर लीजिए। (उठते हैं।)

गो. प्रसाद : यह सब आप क्यों तकल्लुफ करते हैं?

रामस्वरूप : हँ–हँ तकल्लुफ किस बात का है? हँ–हँ! यह तो मेरी बड़ी तकदीर है कि आप मेरे यहाँ तशरीफ लाए। वरना मैं किस काबिल हूँ। हँ–हाँ– माफ कीजिएगा जरा। अभी हाजिर हुआ। (अंदर जाते हैं।)

गो. प्रसाद : (थोड़ी देर बाद दबी आवाज़ में) आदमी तो भला है। मकान–वकान से हैसियत भी बुरी नहीं मालूम होती। पता चले, लड़की कैसी है?

शंकर : जी . . .

(कुछ खँखारकर इधर–उधर देखता है।)

गो. प्रसाद : क्यों क्या हुआ?

शंकर : कुछ नहीं।

गो. प्रसाद : झुककर क्यों बैठते हो? ब्याह तय करने आए, तो कमर सीधी करके बैठो। तुम्हारे दोस्त ठीक कहते हैं कि शंकर की बैक बोन . .. .

(इतने में बाबू रामस्वरूप आते हैं, हाथ में चाय की ट्रे लिए हुए। मेज पर रख देते हैं।)

गो. प्रसाद : आखिर आप माने नहीं।

रामस्वरूप : (चाय प्याले में डालते हुए) हँ–हँ–हँ? आपको विलायती चाय पसंद है या हिन्दुस्तानी?

गो. प्रसाद : नहीं–नहीं साहब, मुझे आधा दूध और आधी चाय दीजिए। और चीनी भी ज्यादा डालिएगा। मुझे तो भाई यह नया फैशन पसंद नहीं। एक तो वैसे ही चाय में पानी काफी होता है और फिर चीनी भी नाम के लिए डाली जाए, तो जायका क्या रहेगा?

रामस्वरूप : हँ–हँ। कहते तो आप सही हैं। (प्याला पकड़ाते हुए)

शंकर : (खँखारकर) सुना है, सरकार अब ज्यादा चीनी लेनेवालों पर टैक्स लगाएगी।

गो. प्रसाद : (चाय पीते हुए) हूँ। सरकार जो चाहे, सो कर ले, पर अगर आमदनी करनी है, तो सरकार को बस एक ही टैक्स लगाना चाहिए।

रामस्वरूप : (शंकर को प्याला पकड़ाते हुए) वह क्या?

गो. प्रसाद : खूबसूरती पर टैक्स! (रामस्वरूप और शंकर हँस पड़ते हैं।)

मजाक नहीं साहब, यह ऐसा टैक्स है जनाब कि देने वाली भी चूँ न करेंगी। बस शर्त यह है कि औरत पर यह छोड़ दिया जाए कि वह अपनी खूबसूरती के स्टैंडर्ड के माफ़िक अपने ऊपर टैक्स तय कर ले, फिर देखिए सरकार की कैसी आमदनी बढ़ती है।

रामस्वरूप : (जोर से हँसते हुए) वाह–वाह! खूब सोचा आपने। वाकई आजकल यह खूबसूरती का सवाल भी बेढब हो गया है। हम लोगों के जमाने में तो यह कभी उठता भी न था। (तश्तरी गोपाल प्रसाद की तरफ बढ़ाते हैं।) लीजिए।

गो. प्रसाद : (समोसा उठाते हुए) कभी नहीं साहब, कभी नहीं।

रामस्वरूप : (शंकर की तरफ मुखातिब होकर) आपका क्या ख्याल है, शंकर बाबू?

रामस्वरूप : किस मामले में?

रामस्वरूप : यही कि शादी तय करने में खूबसूरती का हिस्सा कितना होना चाहिए?

गो. प्रसाद : (बीच में ही) यह बात दूसरी है कि बाबू रामस्वरूप, मैंने आपसे पहले ही कहा था, लड़की का खूबसूरत होना निहायत जरूरी है। कैसे भी हो, चाहे पौडर वगैरह लगाए, चाहे वैसे ही। बात यह है कि हम आप मान भी जाएँ, मगर घर की औरतें तो राजी नहीं होतीं। आपकी लड़की तो ठीक है?

रामस्वरूप : जी हाँ, वह तो आप देख लीजिएगा।

गो. प्रसाद : देखना क्या! जब आपसे इतनी बातचीत हो चुकी है, तब तो यह रस्म ही समझिए।

रामस्वरूप : हँ–हँ, यह तो आपका मेरे ऊपर भारी अहसान है। हँ–हँ।

गो. प्रसाद : और जायचा (जन्मपत्री) तो मिल ही गया होगा?

रामस्वरूप : जी, जायचे का मिलना क्या मुश्किल बात है। ठाकुर जी के चरणों में रख दिया। बस खुद–ब–खुद मिला हुआ समझिए।

गो. प्रसाद : यह ठीक कहा आपने, बिल्कुल ठीक। (थोड़ी देर रुककर) लेकिन हाँ, यह जो मेरे कानों को भनक पड़ी है, यह गलत है न?

रामस्वरूप : (चौंककर) क्या?

गो. प्रसाद : यह पढ़ाई–लिखाई के बारे में! जी हाँ, साफ बात है साहब, हमें ज्यादा पढ़ी लिखी लड़की नहीं चाहिए। मेम साहब तो रखनी नहीं, कौन भुगतेगा उनके नखरों को। बस, हद–से–हद मैट्रिक पास होनी चाहिए।

क्यों शंकर?

शंकर : जी हाँ, कोई नौकरी तो करनी नहीं।

रामस्वरूप : नौकरी का तो कोई सवाल ही नहीं उठता।

गो. प्रसाद : और क्या साहब! देखिए, कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि जब आपने अपने लड़के को बी. ए, एम. ए. तक पढ़ाया है, तब उनकी बहुएँ भी ग्रेजुएट लीजिए। भला पूछिए इन अक्ल के ठेकेदारों से कि क्या लड़कों की पढ़ाई और लड़कियों की पढ़ाई एक बात है। अरे मर्दों का काम तो है ही पढ़ना और काबिल होना। अगर औरतें भी वही करने लगीं, अंग्रेजी अखबार पढ़ने लगीं और पॉलिटिक्स वगैरह पर बहस करने लगीं, तब तो हो चुकी गृहस्थी। जनाब मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं, शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं।

रामस्वरूप : जी हाँ, और मर्द की दाढ़ी होती है, औरतों की नहीं।

हँ–हँ–हँ

(शंकर भी हँसता है, मगर गोपाल प्रसाद गंभीर हो जाते हैं।)

गो. प्रसाद : हाँ, हाँ वह भी सही है। कहने का मतलब यह है कि कुछ बातें दुनिया में ऐसी हैं, जो सिर्फ मर्दों के लिए हैं और ऊँची तालीम भी ऐसी चीजों में से एक है।

रामस्वरूप : (शंकर से) चाय और लीजिए।

शंकर : धन्यवाद, पी चुका।

रामस्वरूप : (गोपाल प्रसाद से) आप?

गो. प्रसाद : बस साहब, अब तो खत्म ही कीजिए।

रामस्वरूप : आपने तो कुछ खाया ही नहीं। चाय के साथ टोस्ट नहीं थे। क्या बताएँ, वह मक्खन . . .

गो. प्रसाद : नाश्ता ही तो करना था साहब, कोई पेट तो भरना था नहीं। और फिर टोस्ट वोस्ट मैं खाता ही नहीं।

रामस्वरूप : हँ–हँ (मेज को एक तरफ सरका देते हैं। फिर अंदर के दरवाजे की तरफ मुँह कर जरा जोर से) अरे, जरा पान भिजवा देना . . . सिगरेट मँगवाऊँ?

गो. प्रसाद : जी नहीं।

(पान की तश्तरी हाथों में लिए उमा आती है। सादगी के कपड़े। गर्दन झुकी हुई। बाबू गोपाल प्रसाद आँखें गड़ाकर और शंकर छिपकर उसे ताक रहे हैं।)

रामस्वरूप : हँ–हँ . . . हँ–हँ, आपकी लड़की है? लाओ बेटी, पान मुझे दो।

(उमा पान की तश्तरी अपने पिता को दे देती है। उस समय उसका चेहरा ऊपर को उठ जाता है, नाक पर रखा हुआ सोने की रिमवाला चश्मा दिखता है। बाप–बेटे चौंक उठते हैं।)

रामस्वरूप : (जरा सकपकाकर) जी, वह तो वह पिछले महीने में इसकी आँखें आ गई थीं, सो कुछ दिनों के लिए चश्मा लगाना पड़ रहा है।

गो. प्रसाद : पढ़ाई–लिखाई की वजह से तो नहीं है कुछ?

रामस्वरूप : नहीं साहब, वह तो मैंने अर्ज किया न।

गो. प्रसाद : हूँ। (संतुष्ट होकर कुछ कोमल स्वर में) बैठो बेटी!

रामस्वरूप : वहाँ बैठ जाओ उमा, उस तख्त पर, अपने बाजे के पास (उमा बैठती है।)

गो. प्रसाद : चाल में तो कुछ खराबी है नहीं। चेहरे पर भी छबि है. . . हाँ, कुछ गाना–बजाना सीखा है?

रामस्वरूप : जी हाँ, सितार भी और बाजा भी। सुनाओ तो उमा एकाध गीत सितार के साथ।

(उमा सितार उठाती है। थोड़ी देर बाद मीरा का मशहूर गीत, 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई' गाना शुरू कर देती है। स्वर से जाहिर है कि गाने का अच्छा ज्ञान है। उसकी आँखें शंकर की झेंपती–सी आँखों से मिल जाती हैं और वह गाते–गाते एकदम रुक जाती है।)

रामस्वरूप : क्यों, क्या हुआ? गाने को पूरा करो उमा!

गो. प्रसाद : नहीं–नहीं साहब, काफी है। लड़की आपकी अच्छा गाती है।

(उमा सितार रखकर अंदर जाने को उठती है।)

गो. प्रसाद : अभी ठहरो, बेटी।

रामस्वरूप : थोड़ा और बैठी रहो, उमा।

(उमा बैठती है।)

गो. प्रसाद : (उमा से) तो तुमने पेंटिंग भी सीखी है . . .

उमा : (चुप)।

रामस्वरूप : हाँ, वह तो मैं आपको बताना भूल ही गया। यह जो तस्वीर टँगी हुई है, कुत्तेवाली, इसी ने खींची है। और वह उस दीवार पर भी।

गो. प्रसाद : हूँ। यह तो बहुत अच्छा है। और सिलाई वगैरह?

रामस्वरूप : सिलाई तो सारे घर की इसी के जिम्मे रहती है, यहाँ तक कि मेरी कमीजें भी, हँ–हँ–हँ।

गो. प्रसाद : ठीक है। . . . लेकिन, हाँ बेटी, तुमने कुछ इनाम जीते हैं?

(उमा चुप। रामस्वरूप इशारे के लिए खाँसते हैं, लेकिन उमा चुप है, उस तरह गर्दन झुकाए। गोपाल प्रसाद अधीर हो उठते हैं और रामस्वरूप सकपकाते हैं।)

रामस्वरूप : जवाब दो उमा। (गो. प्रसाद से) हँ– हँ जरा शरमाती है। इनाम तो इसने . . .

गो. प्रसाद : (जरा रुखी आवाज में) जरा मुँह भी तो खोलना चाहिए।

रामस्वरूप : उमा, देखो आप क्या कह रहे हैं? जवाब दो न।

उमा : (हल्की, लेकिन मजबूत आवाज में) क्या जवाब दूँ बाबू जी! जब कुर्सी, मेज बिकती है, तब दुकानदार कुर्सी, मेज से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीददार को दिखला देता है, पसंद आ गई तो अच्छा है वरना. . .

रामस्वरूप : (चौककर खड़े हो जाते हैं) उमा, उमा!

उमा : अब मुझे कह लेने दो बाबू जी! ये जो महाशय मेरे खरीददार बनकर आए हैं, उनसे जरा पूछिए कि क्या लड़कियों के दिल नहीं होते? क्या उनको चोट नहीं लगती है? क्या वे बेबस भेड़–बकरियाँ हैं? जिन्हें कसाई अच्छी तरह देख–भालकर.....?

गो. प्रसाद : (ताव में आकर) बाबू रामस्वरूप, आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे यहाँ बुलाया था?

उमा : (तेज आवाज में) हाँ, और हमारी बेइज्जती नहीं होती, जो आप इतनी देर से नाप तौल कर रहे हैं? और जरा अपने इन साहबजादे से पूछिए कि अभी पिछले फरवरी में ये लड़कियों के हॉस्टल के इर्द–गिर्द क्यों घूम रहे थे, और वहाँ से क्यों भगाए गए थे?

शंकर : बाबू जी चलिए।

गो. प्रसाद : लड़कियों के हॉस्टल में? क्या तुम कॉलेज में पढ़ी हो?

(रामस्वरूप चुप)

उमा : जी हाँ, मैं कॉलेज में पढ़ी हूँ। मैंने बी.ए. पास किया है कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की और न आपके पुत्र की तरह ताक–झाँककर कायरता दिखाई है। मुझे अपनी इज्जत, अपने मान का ख्याल तो है, लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह नौकरानी के पैरों पड़कर अपना मुँह छिपाकर भागे थे।

रामस्वरूप : उमा, उमा?

गो. प्रसाद : (खड़े होकर गुस्से में) बस हो चुका। बाबू रामस्वरूप आपने मेरे साथ दगा किया। आपकी लड़की बी.ए. पास है, आपने मुझसे कहा था कि सिर्फ मैट्रिक तक पढ़ी है। लाइए . . . मेरी छड़ी कहाँ है? मैं चलता हूँ! (बेंत ढूँढ़कर उठाते हैं।) बी. ए. पास! उफफोह! गजब हो जाता! झूठ का भी कुछ ठिकाना है, आओ, बेटे, चलो. . . . (दरवाजे की ओर बढ़ते हैं।)

उमा : जी हाँ, जाइए, लेकिन घर जाकर जरा यह पता लगाइएगा कि आपके लाड़ले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं– यानी बैकबोन, बैकबोन।

(बाबू गोपाल प्रसाद के चेहरे पर बेबसी का गुस्सा है। उनके लड़के के रुआँसापन। दोनों बाहर चले जाते हैं। बाबू रामस्वरूप कुर्सी पर धम से बैठ जाते हैं। उमा सहसा चुप हो जाती है, लेकिन उसकी हँसी सिसकियों में तब्दील हो जाती है। प्रेमा का घबराहट की हालत में आना।)

प्रेमा : उमा, उमा . . . रो रही है।

(यह सुनकर रामस्वरूप खड़े होते हैं। रतन आता है।)

रतन : बाबू जी मक्खन।

(सब रतन की तरफ देखते हैं और परदा गिरता है।)

शब्दार्थ

मर्ज़ – बीमारी/रोग; **ग्रामोफोन** – एक तरह का यंत्र जिससे संगीत सुना जाता था; **इंट्रेंस** – प्रवेश; **दकियानूसी** – पुरातन पंथी, रुढ़िवादी; **तकल्लुफ** – शिष्टाचार, औपचारिकता; **बेबसी** – लाचारी।

अभ्यास

पाठ से

1. लड़केवालों के स्वागत में रामस्वरूप के घर में हो रही तैयारियों का वर्णन कीजिए।
2. पुराने ज़माने की लड़कियों और उमा के बीच क्या अंतर है?
3. उमा गोपाल प्रसाद से यह क्यों कहती है, ''घर जाकर यह पता लगाइएगा कि आपके लाड़ले बेटे की रीढ़ की हड्डी है भी या नहीं?''
4. पाठ के आधार पर उमा का चरित्र–चित्रण कीजिए।
5. लड़केवालों के लौटने के बाद उमा की हँसी सिसकियों में क्यों तब्दील हो गई?
6. उमा के पिता द्वारा अपनी बेटी को उच्च शिक्षा दिलवाना और विवाह के समय उसे छिपाना। यह विरोधाभास उनकी किस विवशता को दिखाता है?

पाठ से आगे

1. पढ़ी–लिखी लड़की के घर में आ जाने से स्थितियाँ किस प्रकार बदलती हैं? अपना उत्तर तर्क सहित लिखिए।
2. क्या लड़के और लड़कियों की शिक्षा व्यवस्था अलग–अलग तरह की होनी चाहिए? कारण बताते हुए अपना उत्तर लिखिए।
3. ''अब मुझे कह लेने दो बाबूजी! ये जो महाशय खरीददार बनकर आए हैं। उनसे ज़रा पूछिए कि क्या लड़कियों के दिल नहीं होते? क्या उनको चोट नहीं लगती है? क्या वे बेबस भेड़–बकरियाँ हैं जिन्हें कसाई अच्छी तरह देख–भालकर . . .?''

   (क) इस वक्तव्य में उमा ने किन प्रवृत्तियों पर चोट की है?

   (ख) वक्तव्य के अंत में अधूरे छोड़े गए वाक्य को पूरा कीजिए।
4. रामस्वरूप अपनी बेटी की पढ़ाई–लिखाई छुपाते हैं और गोपाल प्रसाद अपने बेटे की कमज़ोरियों पर पर्दा डालते हैं। क्या आपको उन दोनों का यह व्यवहार उचित लगता है? अपने पक्ष के समर्थन में तर्क दीजिए।

भाषा के बारे में

1. पाठ में आए इन मुहावरों और लोकोक्ति के अर्थ लिखकर उनका प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए–

   (क) बाप सेर है तो बेटा सवा सेर

   (ख) खींसे निपोरना

(ग) काँटों में घसीटना

(घ) चूँ न करना

(ङ) कानों में भनक पड़ना

(च) आँखें गड़ाकर देखना

2. इन वाक्यों के रेखांकित शब्दों को उनके हिंदी पर्यायवाची शब्दों से इस तरह बदलिए कि वाक्य का अर्थ न बदले–

(क) तुम्हारी बेवकूफ़ी से सारी मेहनत बेकार न हो जाए।

(ख) लड़कियों के दिल नहीं होते।

(ग) उनके दकियानूसी खयालों पर मुझे गुस्सा आता है।

(घ) उसकी हँसी सिसकियों में तब्दील हो जाती है।

(ङ) चीनी नाम के लिए डाली जाए तो ज़ायका क्या रहेगा?

3. हिंदी में कुछ शब्द पुल्लिंग रूप में प्रयोग किए जाते हैं किंतु उनके पर्यायवाची उर्दू शब्द स्त्रीलिंग रूप में है।
(क) उदाहरणों को समझते हुए तालिका पूरी कीजिए–

	हिंदी पुल्लिंग	उर्दू स्त्रीलिंग
उदाहरण–	मार्ग	राह
	विलंब	देर
	रोग	————————
	स्वर	————————
	व्यायाम	————————
	चित्र	————————

(ख) परिवर्तित उर्दू स्त्रीलिंग शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

4. पाठ में आए इन शब्दों को देखिए–

'टोस्ट–वोस्ट', पेंटिंग–वेंटिंग, पढ़ाई–वढ़ाई

शब्दों के इस तरह के युग्म में पहला शब्द सार्थक होता है और दूसरा निरर्थक। इन शब्दों में निरर्थक शब्द

के स्थान पर 'आदि' या 'वगैरह' लिखने से भी शब्दों के अर्थ में कोई बदलाव नहीं होता है। जैसे– 'टोस्ट–वगैरह' को 'टोस्ट–आदि' भी लिखा जा सकता है।

अपनी बातचीत में आमतौर पर प्रयोग में आने वाले 20 ऐसे ही शब्दों को लिखिए।

5. नीचे एक बाल नाटिका के कुछ संवाद दिए गए हैं। खिलाड़ियों के दो दलों के बीच संवाद हो रहा है। दल एक के कथन पूरे–पूरे दिए गए हैं, किंतु दल दो के कथन नहीं दिए गए हैं। आप अपनी समझ के अनुसार दल दो के कथनों को लिखिए।

दल एक – अरे, तुम लोग कहाँ जा रहे हो?

दल दो – ————————————————————

दल एक – क्या? तिकोने मैदान में? किसलिए?

दल दो – ————————————————————

दल एक – नहीं, तुम वहाँ नहीं खेल सकते। वह हमारा मैदान है, क्योंकि हमने उसे पहले ढूँढ़ा है।

दल दो – ————————————————————

दल एक – नहीं, तुम कोई और जगह ढूँढ़ो।

दल दो – ————————————————————

दल एक – हम नहीं मानते। वह हमारा मैदान है।

दल दो – ————————————————————

दल एक – तुम झगड़ा करना चाहते हो?

दल दो – ————————————————————

दल एक – आओ, वहाँ खड़े मत रहो।

दल दो – ————————————————————

योग्यता विस्तार

1. महिलाएँ आजकल कई क्षेत्रों में सफलतापूर्वक कार्य कर रही हैं। क्षेत्र का नाम लिखकर उस क्षेत्र की सफल/प्रसिद्ध महिलाओं के नाम लिखिए–

क्षेत्र	कार्य/विधा	उल्लेखनीय महिला
उदाहरण– संगीत	वायलिन वादन	एन. राजम

BTNNKZ

2. दहेज–प्रथा पर लगभग 300 शब्दों में एक निबंध लिखिए।
3. समाचार पत्र–पत्रिकाओं से दहेज प्रताड़ना से संबद्ध खबरों की कतरन एकत्र कर विद्यालय की भित्ति–पत्रिका में लगाइए।

●●●

निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार

बच्चे किसी भी देश के सर्वोच्च संपत्ति होने के साथ–साथ भविष्य के संभावित मानव संसाधन भी है इस बात को दृष्टिगत रखते हुए संविधान के 86वें संशोधन अधिनियम 2002 द्वारा अनुच्छेद 21(A) जोड़ा गया, जो यह प्रावधान करता है कि राज्य कानून बनाकर 6 से 14 आयु के सभी बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा उपबंध करायेगा।

इसी प्रकार अप्रैल 2002 में कश्मीर राज्य को छोड़कर संपूर्ण भारत में यह लागू हुआ। इस अधिकार को व्यवहारिक रूप देने के लिए संसद में अनुच्छेद 45 के तहत निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009 पारित हुआ तथा अप्रैल 2010 से यह लागू हुआ।